PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 037
दि. 06.06.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से सूरत से दक्षिण गुजरात में 18,778 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण

‘सूरत केवल शहर नहीं, बल्कि स्पिरिट है’ : एक समय प्लेग जैसी महामारी का सामना करने वाला सूरत आज समग्र देश में स्वच्छता तथा ग्रीन एनर्जी के मॉडल के रूप में उभरकर आया है : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

- स्वच्छता अभियान देश के स्वस्थ भविष्य के लिए संस्कार पर्व
- सूरत का हजीरा आज मैरीटाइम हब तथा डिफेंस प्रोडक्शन के ग्लोबल सेंटर के रूप में उभर रहा है
- ‘ग्रीन सिटी’ तथा ‘क्लीन सिटी’ सूरत ने स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बनाया
- सूरत की ‘सर्कुलर वॉटर इकोनॉमी’ का समग्र देश में संज्ञान लिया जा रहा है
- भारत ‘इकोनॉमी’ तथा ‘इकोलॉजी’ के समन्वय के साथ ‘ग्रीन ग्रोथ’ की दिशा में अग्रसर बन रहा है

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिवान नेतृत्व में गुजरात ‘ग्रीन ग्रोथ’ एवं ‘सस्टेनेबल डेवलपमेंट’ के मॉडल के साथ ‘विकसित भारत@2047’ के निर्माण में अग्रसर
- ‘पीएम सूर्य घर निःशुल्क बिजली योजना’ में गुजरात 21 प्रतिशत योगदान के साथ देश में लीड ले रहा है
- ‘कैच द रेन’ अभियान अंतर्गत जल संचय को जन आंदोलन बनाकर राज्य में 2.20 लाख रेन वॉटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर तथा 2,703 अमृत सरोवरों का निर्माण किया गया

- **भरूच जिले में 894 करोड़ रुपए से अधिक की 6 जीआईडीसी परियोजनाओं का लोकार्पण**
- **7,689 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित वडोदरा–मुंबई एक्सप्रेसवे (पैकेज 6 एवं 7) का लोकार्पण**
- **भरूच तथा वलसाड जिलों में केमिकल एवं बल्क ड्रग जोन के लिए 1,063 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं का लोकार्पण**
- **नवसारी (न्यू) में विश्व के सबसे बड़े डिजिटल सबस्टेशन सहित 4,546 करोड़ रुपए की ट्रांसमिशन नेटवर्क विस्तार परियोजना का लोकार्पण; गुजरात से महाराष्ट्र तक पहुंचेगा उच्च क्षमता वाला विद्युत प्रवाह**

- **सूरत मनपा वेस्ट वॉटर की ट्रीटमेंट कर स्थानीय उद्योगों को स्वच्छ पानी बेचकर प्रति वर्ष 140 करोड़ रुपए की कमाई करती है : उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी**
- **प्रधानमंत्री के जनभागीदारी से जल संचय के आह्वान के परिणामस्वरूप भविष्य की अनिश्चितताओं के विरुद्ध भारत अपनी जल आवश्यकताएं पूर्ण करने में आत्मनिर्भर बनेगा : केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी. आर. पाटिल**
- **दक्षिण गुजरात के सर्वांगीण विकास को मिलेगी नई गति : विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रधानमंत्री ने केंद्र और राज्य सरकार की 24 परियोजनाओं की भेंट दी**
- **4,852 करोड़ रुपए की लागत से 5 परियोजनाओं का शिलान्यास तथा 13,926 करोड़ रुपए की लागत से 19 परियोजनाओं का लोकार्पण**

गांधीनगर : विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शुक्रवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सूरत से केंद्र और राज्य सरकार की कुल 24 विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण कर दक्षिण गुजरात को 18,778 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं की भेंट दी।

सूरत के दीनदयाल उपाध्याय इनडोर स्टेडियम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, मंत्रीगण तथा अन्य महानुभावों की उपस्थिति में आयोजित समारोह में प्रधानमंत्री ने सूरती स्पिरिट की सराहना करते हुए कहा कि सूरत केवल एक शहर नहीं, बल्कि स्पिरिट है। एक समय प्लेग जैसी महामारी का सामना करने वाला सूरत आज पूरे देश में स्वच्छता एवं ग्रीन एनर्जी के मॉडल के रूप में उभरकर आया है।

उन्होंने सूरतवासियों की स्वच्छता पहल तथा पर्यावरण सुरक्षा के कार्यों को प्रेरणादायी बताते हुए जोड़ा कि सूरत की इसी जागरूकता और संस्कारों के कारण ही वह आज देश का सबसे स्वच्छ शहर बना है। देश में स्वच्छता को संस्कार में परिवर्तित करना है, क्योंकि स्वच्छता अभियान देश के स्वस्थ भविष्य के लिए संस्कार पर्व है।

दक्षिण गुजरात में सड़क, ऊर्जा, इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित केंद्र सरकार की 16,968 करोड़ रुपए की बहुविध परियोजनाओं तथा राज्य सरकार के 1,810 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इन परियोजनाओं से केवल औद्योगिक उत्पादन क्षमता में ही वृद्धि नहीं होगी, बल्कि पर्यावरणीय संरक्षण एवं सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लक्ष्यों

को प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आगे कहा कि आज जब विश्व के देश पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रीन फ्यूचर की ओर में आगे बढ़ रहे हैं, तब भारत भी इकोनॉमी तथा इकोलॉजी के समन्वय के साथ ग्रीन ग्रोथ की दिशा में अग्रसर बन रहा है। इस दिशा में गुजरात ने इस शताब्दी के प्रारंभ में देश में सर्वप्रथम क्लाइमेट चेंज विभाग की स्थापना की थी तथा पाटण के चारणका में भारत का पहला सोलर पार्क स्थापित करके पूरे देश को दिशा दिखाई थी। उन्होंने कहा कि आज भारत विश्व के शीर्ष 5 सोलर एनर्जी उत्पादक देशों में शामिल है, जिसमें गुजरात का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश की कुल रिन्यूएबल एनर्जी कैपेसिटी में गुजरात का हिस्सा लगभग 20 प्रतिशत है, जिस पर उन्होंने आनंद व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने प्रकृति के साथ प्रगति का मंत्र अपनाकर विकास का मार्ग चुना है। पिछले 12 वर्षों से समग्र देश में वेस्ट टू वेल्थ के ध्येय के साथ कचरे से कंचन यानी कूड़े को बड़े पैमाने पर संपत्ति में परिवर्तित करने का अभियान चल रहा है। यह अभियान हमारे शहरों को साफ रखने तथा उन्हें हरियाला एवं स्वच्छ बनाने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

वर्तमान वैश्विक स्थिति का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्तमान दशक समग्र विश्व के लिए आपदाओं का दशक सिद्ध हो रहा है। पहले कोरोना संकट, उसके बाद विभिन्न देशों के बीच युद्ध छिड़ गए और अब ऊर्जा संकट ने पूरे विश्व को अव्यवस्था में धकेल दिया है, लेकिन केंद्र सरकार ने देश की ऊर्जा सप्लाई चेन को बाधित नहीं होने दिया है। 1.4 अरब भारतीयों के सामूहिक प्रयासों से देश ऐसे प्रत्येक संकट का मजबूती से सामना कर रहा है।

सूरत की सर्कुलर वॉटर इकोनॉमी की प्रशंसा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि शहर के वेस्ट वॉटर को ट्रीट कर उद्योगों को बिक्री के जरिये प्रदान करने की यह पद्धति पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक उपार्जन का भी उत्तम उदाहरण है। उन्होंने कहा कि भविष्य में तापी बैराज परियोजना के माध्यम से सूरत की जल समस्या का स्थायी समाधान होगा। साथ ही उन्होंने सूरत शहर में अगले पांच दशकों तक पानी की कमी न हो, ऐसे सूरत मनपा के आयोजन की सराहना की।

आत्मनिर्भर भारत का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सूरत का हजीरा क्षेत्र आज मैरीटाइम हब तथा रक्षा डिफेंस प्रोडक्शन के ग्लोबल सेंटर के रूप में उभर रहा है। यहां वैश्विक व्यापार का इकोसिस्टम निर्मित हुआ है, इकोनॉमी के लिए उज्ज्वल अवसर हैं। उन्होंने कहा कि वडोदरा-मुंबई एक्सप्रेसवे, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर और आधुनिक रेलवे नेटवर्क द्वारा आदिवासी तथा ग्रामीण क्षेत्रों को भी विकास की मुख्य धारा से जोड़ा गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के नागरिक अनिश्चितता, अराजकता और निराशा को कभी पसंद नहीं करते। इसका प्रमाण पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में देखने को मिला। उन्होंने आश्वासन दिया कि देश के करोड़ों नागरिक विशिष्ट संकल्पों से सिद्धि प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध बनें, देशवासी दो कदम आगे बढ़ें, तो वे स्वयं तीन कदम आगे बढ़कर उनका साथ देने तथा देशवासियों की विकास संबंधी आकांक्षाओं एवं विश्वास को परिपूर्ण करने को तत्पर हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि गुजरात और देश के औद्योगिक विकास में दक्षिण गुजरात का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे में दक्षिण गुजरात के नर्मदा, तापी, भरूच और छोटा उदयपुर जिलों में हाईवे कनेक्टिविटी बढ़ने से पढ़ाई, दवाई और कमाई अर्थात शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी।

अपने संबोधन के अंत में प्रधानमंत्री ने उपस्थित जन समूह का विकसित भारत और विकसित गुजरात के संकल्प को साकार करने के लिए पूर्ण समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश और गुजरात लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। उनके मार्गदर्शनमें गुजरात ‘विकसित गुजरात से विकसित भारत-2047’ के विजन को साकार करने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री के विश्वास, विकास और जनकल्याण के पथप्रदर्शन में दुनिया भर में भारत का गौरव बढ़ा है। प्रधानमंत्री ने समय से दो कदम आगे की सोच के साथ अपने मुख्यमंत्रित्व काल में गुजरात में क्लाइमेट चेन्ज का एक अलग विभाग बनाया था और क्लाइमेट चेन्ज की चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए कमर कसी थी। उन्होंने पाटण के चारणका में एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा पार्क स्थापित कर राज्य को ऊर्जा दक्ष बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात ‘ग्रीन ग्रोथ’ और ‘सस्टेनेबल डेवलपमेंट’ के मॉडल के साथ ‘विकसित भारत@2047’ के निर्माण में अग्रणी रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विजन के परिणामस्वरूप गुजरात सोलर एनर्जी सहित रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में एक अग्रणी राज्य बन गया है। ‘पीएम सूर्यघरः मुफ्त बिजली योजना’ में गुजरात 21 फीसदी के योगदान के साथ देश में देश में सबसे आगे है। गुजरात 2030 तक भारत को ‘नेट जीरो एमिशन’ कंट्री बनाने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को साकार करने के लिए भी कटिबद्ध है।

नई पीढ़ी को समृद्ध भविष्य देने के लिए जल संरक्षण को अति आवश्यक बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ‘कैच द रेन’ - जल संरक्षण जनभागीदारी अभियान 2.0 के अंतर्गत जल संचय को जल आंदोलन बनाते हुए पूरे राज्य में 2.20 लाख रेन वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर का निर्माण पूरा कर लिया गया है। साथ ही, उन्होंने कहा कि राज्य के 33 जिलों में 2703 अमृत सरोवर का पूरा होने से भूमिगत जल के स्तर में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है।

मुख्यमंत्री ने राज्य में ग्रीन कवर बढ़ाने के प्रयासों का जिक्र करते हुए कहा कि ‘एक पेड़ मां के नाम अभियान 2.0’ के तहत राज्य में 16.96 करोड़ पौधे लगाए गए हैं। 82 नमो वडवन (बरगद वन) विकसित किए गए हैं। पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली के लिए ‘मिशन लाइफ’ और प्राकृतिक खेती का दायरा बढ़ाकर 8 लाख से अधिक किसानों को इस अभियान के साथ जोड़ा गया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के करकमलों से राज्य को 18,800 करोड़ रुपए से अधिक के 24 विकास कार्यों की सौगात मिली है, जो राज्य की सुख-सुविधा और खुशहाली में वृद्धि करेंगे। राज्य के जनजातीय वन क्षेत्र में हाईवे कनेक्टिविटी के लिए नेशनल हाईवे प्रोजेक्ट तथा वडोदरा-मुंबई एक्सप्रेस-वे (पैकेज 6 और 7) प्रोजेक्ट राज्य की प्रगति के नए राजमार्ग साबित होंगे।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि प्रधानमंत्री राज्य के अपने दौरे के दौरान करोड़ों रुपए के विकास कार्यों की अनमोल भेंट देते हैं, इसी कड़ी में 18 हजार करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की भेंट दक्षिण गुजरात के सर्वांगीण विकास को गति देगी।

पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि सूरत की धरती पर आए पर्यावरण के सच्चे रक्षक प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए 15,500 से अधिक नागरिकों ने प्लास्टिक का इस्तेमाल किए बिना हाथ से बनाए पोस्टर प्रदर्शित किए हैं। उन्होंने कहा कि ग्रीन प्रोटोकॉल पर आधारित इस कार्यक्रम में पेयजल के लिए बोतल की जगह मटके का उपयोग और वेस्ट से बेस्ट की थीम पर बेकार वस्तुओं का उपयोग करके बैकड्रॉप तैयार किया गया है। उन्होंने आगे कहा कि आज देश के कोने-कोने में बिजली पहुंच गई है। ‘पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना’ में गुजरात पूरे देश में प्रथम स्थान पर है और उसे पांच राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। सूरत महानगर पालिका देश की एकमात्र ऐसी मनपा है, जो अपशिष्ट जल को रिसाइकल करके उसे उद्योगों को देती है, जिससे प्रतिवर्ष 140 करोड़ रुपए की बड़ी आय होती है।

प्रधानमंत्री के 12 वर्षों के सुशासन की सराहना करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश ने सेवा और सुशासन के अभूतपूर्व आयाम हासिल किए हैं। उनके कार्यकाल में देश भर में 4 करोड़ पक्के मकान, 10 करोड़ शौचालय, 50 करोड़ जनधन बैंक खाते, 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क राशन तथा 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने का भगीरथ कार्य हुआ है।

श्री संघवी ने कहा कि आज ऑनलाइन यूपीआई ट्रांजेक्शन के क्षेत्र में भारत दुनिया का सबसे बड़ा देश बन गया है। इसके अलावा, उन्होंने सर्जिकल स्ट्राइक, ऑपरेशन सिंदूर और अनुच्छेद 370 को निरस्त करके जम्मू-कश्मीर को भारत के साथ पूर्ण रूप से जोड़ने का ऐतिहासिक काम किया है। इतना ही नहीं, देश को वैश्विक स्तर की सुविधा युक्त ‘वंदे भारत’ ट्रेनों की भेंट दी है और देश में हवाई कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए आधुनिक हवाई अड्डों का निर्माण किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की ईंधन की बचत करने की अपील में लोग स्वैच्छिक रूप से शामिल हुए हैं। गुजरात में केवल पांच दिनों में ही अहमदाबाद मेट्रो में यात्रियों की संख्या में वृद्धि हो गई। इसी प्रकार, अब लोग राज्य परिवहन की बसों में अधिक यात्रा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का स्वागत करने के लिए करीब 18 समूहों में हजारों लोग साइकिल यात्रा में जुड़कर इंडोर स्टेडियम तक आए हैं।

इस अवसर पर केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल ने स्वागत भाषण में कहा कि टेक्सटाइल, डायमंड, सिल्क, मेट्रो, ब्रिज और स्वच्छ सिटी सूरत प्रधानमंत्री के ‘विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात’ विजन में अमूल्य योगदान देने को तैयार है।

उन्होंने सूरत में आकार लेने वाली देश की पहली 29 से अधिक मंजिलों वाली नई सरकारी इमारत और मिनी सचिवालय का उल्लेख किया और कहा कि सूरत की तापी बैराज योजना को प्रधानमंत्री ने मंजूरी दी थी। केंद्र, राज्य और मनपा के सहयोग से 1000 करोड़ रुपए का यह प्रोजेक्ट आगामी दो वर्ष में पूरा हो जाएगा। इसके चलते सूरत पूरे देश में इकलौता ऐसा शहर बन जाएगा, जिसने आने वाले 50 वर्षों की पानी की जरूरत को ध्यान में रखकर भविष्य-उन्मुख प्रबंधन किया है। उन्होंने तापी शुद्धिकरण प्रोजेक्ट के लिए 2019 में 900 करोड़ रुपए आवंटित करने के लिए प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री की जनभागीदारी से जल संचय की अपील के कारण भविष्य की अनिश्चितताओं का सामना करते हुए भारत अपनी पानी की जरूरतों को पूरा करने में आत्मनिर्भर बन जाएगा। साथ ही, उन्होंने बताया कि इस अभियान के जरिए राजस्थान में 40 हजार, मध्य प्रदेश में 35 हजार और बिहार सहित देशभर में जनसहयोग से 1.55 करोड़ जल संचय संरचनाएं बनाई गई हैं, जिसमें बड़े पैमाने में पानी का संग्रह हुआ है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री और महानुभावों ने सभा स्थल पर वृक्षारोपण करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

कार्यक्रम में वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, शिक्षा मंत्री श्री प्रद्युम्न वाजा, आदिजाति मंत्री श्री नरेशभाई पटेल, स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुलभाई पनशेरिया, आदिजाति राज्य मंत्री डॉ. जयरामभाई गामित, विधानसभा उपाध्यक्ष श्री पूर्णेशभाई मोदी, सांसद सर्वश्री मुकेशभाई दलाल, प्रभुभाई वसावा, राज्यसभा सांसद श्री गोविंदभाई धोळकिया, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा, महापौर श्रीमती मायाबेन मावाणी, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री समीर मोदी, जिला कलेक्टर श्री तेजस परमार, मनपा आयुक्त श्री एम. नागराजन, पुलिस आयुक्त श्री अनुपमसिंह गहलोत, विधायक, पदाधिकारी, जिला प्रशासन एवं सूरत मनपा के अधिकारी तथा बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

महज दो साल में सूरत का SUDA आवासीय परिसर जर्जर हालत में, 10 हजार से अधिक निवासियों का जीवन खतरे में

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत के नासिरनगर स्थित वेद दरवाजा के 50 वर्षीय निवासियों को बिना किसी लिखित या मौखिक निर्देश के ध्वस्त करके एसएमसी ने मानवता पर कलंक लगाया है और उन्हें भीषण गर्मी में सड़कों पर भटकने के लिए मजबूर कर दिया है। वहीं दूसरी ओर, सरकारी विभाग सुदा ने सूरत के जहांगीरपुरा क्षेत्र में मध्यम और सामान्य वर्ग के लोगों के लिए सुदा संस्कृति वंकाला आवास योजना का निर्माण किया है। इस योजना के तहत, गरीब और मध्यम वर्ग के परिवार 2024 तक अपने घर का सपना लेकर यहां आए थे। लेकिन महज दो वर्षों में, इन सुदा घरों की जर्जर हालत ने 10 हजार से अधिक लोगों को जान जोखिम में डालकर जीने के लिए मजबूर कर दिया है।

आवासीय परिसर के निवासियों के अनुसार, घरों में दीवारों का उखड़ना, छत से पानी टपकना, प्लास्टर गिरना और बाहर लोहे की छड़ें दिखाई देना जैसी गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। आगामी मानसून में स्थिति और भी खराब होने की आशंका है। बाथरूम, रसोई और कमरों की दीवारों से लगातार पानी टपक रहा है। इस संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार, निवासियों द्वारा इस गंभीर समस्या के बारे में बार-बार शिकायत करने के बावजूद, प्रशासन द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। इसके अलावा, जब निवासी शिकायत लेकर जाते हैं, तो अधिकारी इसके विपरीत शिकायतकर्ताओं को यह कहकर जेल में डालने की धमकी देते हैं कि वे चोर कोतवाल पर जुर्माना लगाएंगे। इस प्रकार, करोड़ों की लागत से निर्मित इस आवास की घटिया गुणवत्ता निवासियों के जीवन के लिए खतरा बन गई है।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि किसी भी नवनिर्मित संपत्ति के लिए बिल्डर को कम से कम 25 वर्ष की गारंटी देनी होती है। यदि इस अवधि के दौरान संपत्ति की गुणवत्ता पर कोई प्रश्न उठता है, तो जिम्मेदारी बिल्डर की होती है, तो फिर उस ठेकेदार की क्यों नहीं जिसने आवास का निर्माण किया है?

NEET परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होने पर एक छात्र ने आत्महत्या कर ली, प्रतियोगी परीक्षाओं के दबाव पर सवाल उठ रहे हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। भारत में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों पर अत्यधिक दबाव के कारण उनमें अवसाद का स्तर बढ़ रहा है। मध्य प्रदेश के मौगंज जिले की NEET परीक्षार्थी आकांक्षा चतुर्वेदी ने 20 मई को आत्महत्या कर ली और उनका शव मिला। आकांक्षा ने परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत की थी और उन्हें अच्छे प्रदर्शन का पूरा भरोसा था। परीक्षा के बाद वह बहुत खुश थीं, लेकिन पेपर लीक की खबरों के बाद वह बेहद परेशान हो गईं। उन्होंने ठीक से खाना-पीना बंद कर दिया। वह बहुत कम बोलती थीं और लगातार तनाव में रहती थीं।

बाद में परिवार को एक हस्तलिखित नोट मिला जिससे पता चला कि युवा छात्रा भावनात्मक उथल-पुथल से गुजर रही थी। इस नोट में आकांक्षा ने अपने माता-पिता से माफी मांगी और कहा कि उसे दोबारा परीक्षा देने से डर लग रहा है। नोट में लिखा था, “माँ और पिताजी, आपने मुझ पर बहुत भरोसा किया था कि मैं चिकित्सा की पढ़ाई करूँगी और डॉक्टर बनूँगी। लेकिन परीक्षा पत्र लीक होने के कारण मैंने सब कुछ खो दिया है।” इस प्रकार, इस आत्महत्या के असली दोषी परीक्षा पत्र लीक माफिया और सरकार तथा शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान हैं। यह बात आज भी छात्र जगत में खुलकर कही जा रही है।

संपादकीय

पर्यावरण रक्षा को समर्पित उत्तर प्रदेश

पृथ्वी का बढ़ता तापमान, अनियमित मानसून, सूखती नदियां, घटते भूजल स्रोत, वायु प्रदूषण और जैव विविधता का क्षरण मानव जीवन, अर्थव्यवस्था और सामाजिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा है। विश्व के विभिन्न हिस्सों में बाढ़, सूखा, हीट वेव जैसी स्थितियां लगातार बन रही हैं। यह स्थिति हमें स्पष्ट संकेत देती है कि प्रकृति के साथ असंतुलित विकास का मूल्य अंततः पूरी मानवता को चुकाना पड़ता है। ऐसे समय में उत्तर प्रदेश ने विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का एक नया मार्ग चुना है। देश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य के रूप में हमारी जिम्मेदारी केवल आर्थिक विकास को गति देना नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करते हुए भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करना भी है। उत्तर प्रदेश का 'हरित पुनर्जागरण' देश के सामने सतत विकास के एक प्रभावी माडल के रूप में उभर रहा है। प्रदेश ने यह सिद्ध किया है कि तीव्र आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं। इस परिवर्तन की सबसे बड़ी शक्ति गांवों, कृषि, जल संसाधनों और स्थानीय समुदायों से जुड़ी पहलों में निहित है। राज्य में बड़े पैमाने पर मिट्टी एवं जल संरक्षण तथा वर्षा जल संचयन के कार्य किए गए हैं। इससे भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा मिला है, प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण हुआ है। उत्तर प्रदेश ने अपनी आर्द्रभूमि और जैव विविधता के संरक्षण के लिए भी प्रभावी कदम उठाए हैं। बलिया स्थित सुरहाताल पक्षी विहार को देश के 100वें रामसर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त होना गौरव का विषय है। इसके साथ ही राज्य की कुल 13 आर्द्रभूमि अंतरराष्ट्रीय महत्व के रामसर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुकी हैं।

नदी संरक्षण हमारी पर्यावरणीय नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। गंगा, यमुना तथा अन्य नदियों के प्रदूषित भाग की नियमित निगरानी की जा रही है। प्रदूषण नियंत्रण, सीवेज प्रबंधन और जनसहभागिता आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से जल गुणवत्ता में सुधार के सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। यह परिवर्तन उन करोड़ों लोगों के जीवन से जुड़ा है, जिनकी संस्कृति, आस्था और आजीविका नदियों पर आधारित है। औद्योगिक विकास और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करना भी हमारी प्राथमिकताओं में है। हमारा उद्देश्य स्पष्ट है-उद्योगों को प्रोत्साहन मिले, लेकिन पर्यावरणीय मानकों से कोई समझौता न हो। वायु प्रदूषण की चुनौती से निपटने के लिए प्रदेश ने 'एयरशेड आधारित प्रबंधन' की अभिनव अवधारणा को अपनाया है। विश्व बैंक समर्थित 'उत्तर प्रदेश क्लीन एयर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट' के माध्यम से वायु गुणवत्ता सुधारने पर कार्य किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक बसों को बढ़ावा, स्वच्छ ईंधन के उपयोग को प्रोत्साहन, पराली एवं कचरा जलाने पर नियंत्रण और निगरानी तंत्र को सुदृढ़ बनाने जैसे सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं। भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए प्रदेश ने दीर्घकालिक जलवायु रणनीतियों पर भी कार्य किया है। 'कार्बन कैप्चर, उपयोग एवं भंडारण' जैसी अवधारणाओं पर कार्य किया जा रहा है। साथ ही 'ग्रीन बजट टैगिंग' जैसी अभिनव पहल के माध्यम से सरकारी योजनाओं और व्ययों का मूल्यांकन उनके पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। हमारा विश्वास है कि जल, जंगल और जमीन केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला हैं। इसी सोच के साथ उत्तर प्रदेश में 2017 से 2026 तक 242 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण किया गया। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान ने पौधारोपण को जनभावनाओं से जुड़ा सामाजिक आंदोलन बना दिया है। हमने जलवायु परिवर्तन की चुनौती को केवल पर्यावरणीय मुद्दे के रूप में नहीं, बल्कि विकास, अर्थव्यवस्था और सामाजिक कल्याण से जुड़े एक व्यापक विषय के रूप में स्वीकार किया है। राज्य में 'उत्तर प्रदेश राज्य कार्ययोजना जलवायु परिवर्तन 2021-2030' के अंतर्गत कृषि, जल संसाधन, ऊर्जा, वन, स्वास्थ्य, शहरी विकास और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में जलवायु-अनुकूल विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। हमारा लक्ष्य केवल पर्यावरणीय क्षति को कम करना नहीं, बल्कि एक ऐसी विकास व्यवस्था का निर्माण करना है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अधिक सक्षम, लचीली और समावेशी हो।

अन्नामलाई का नई पार्टी बनाने का निर्णय आवेश में लिया गया फैसला नहीं, लंबे चिंतन का निष्कर्ष दिखाई देता है

> अन्नामलाई ने खुलकर कहा कि उनके भीतर लंबे समय से यह संघर्ष चल रहा था कि वह पहले भारतीय हैं या तमिल। यह बयान केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि तमिलनाडु की राजनीति के उस मूल द्वंद्व को सामने लाता है जिसमें राष्ट्रीय दलों को अक्सर क्षेत्रीय अस्मिता के सामने संघर्ष करना पड़ता है।

तमिलनाडु की राजनीति में एक नया भूचाल उस समय आ गया जब भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने पार्टी से इस्तीफा देकर अपने नए राजनीतिक आंदोलन की घोषणा कर दी। यह फैसला तमिलनाडु की जमी हुई राजनीतिक संस्कृति को चुनौती देने वाला एक बड़ा संदेश है। अन्नामलाई ने जिस साफगोई, साहस और वैचारिक दृढ़ता के साथ अपने फैसले को सामने रखा है, उसने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह अब किसी दल के सीमित दायरे में नहीं, बल्कि तमिल समाज की व्यापक आकांक्षाओं के प्रतिनिधि के रूप में उभरना चाहते हैं।अन्नामलाई ने खुलकर कहा कि उनके भीतर लंबे समय से यह संघर्ष चल रहा था कि वह पहले भारतीय हैं या तमिल। यह बयान केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि तमिलनाडु की राजनीति के उस मूल द्वंद्व को सामने लाता है जिसमें राष्ट्रीय दलों को अक्सर क्षेत्रीय अस्मिता के सामने संघर्ष करना पड़ता है। उन्होंने बताया कि चार दिसंबर 2025 को ही उन्होंने पार्टी नेतृत्व को इस्तीफे का फैसला बता दिया था, लेकिन उनसे चुनाव तक रुकने का अनुरोध किया गया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय जनता पार्टी का शीर्ष नेतृत्व उनकी लोकप्रियता और प्रभाव को लेकर कितना सजग था। पूर्व पुलिस अधिकारी रहे अन्नामलाई ने भारतीय जनता पार्टी में सकारात्मक बदलाव के उद्देश्य से प्रवेश किया था। उन्होंने कहा कि पार्टी में रहते हुए उन्होंने कभी तमिलनाडु की पहचान से समझौता नहीं किया। पिछले अठारह महीनों में संगठनात्मक मामलों को लेकर उनकी असहमति लगातार बढ़ती गई। यही कारण है कि उन्होंने अब एक स्वतंत्र राजनीतिक रास्ता चुनने का फैसला किया है। यह निर्णय किसी आवेश का परिणाम नहीं, बल्कि लंबे चिंतन और रणनीतिक तैयारी का हिस्सा दिखाई देता है।

अन्नामलाई ने अपने नए आंदोलन "वी द लीडर" की घोषणा करते हुए साफ कर दिया कि उनका उद्देश्य केवल एक और राजनीतिक दल खड़ा करना नहीं, बल्कि राजनीति की भाषा और संस्कृति को बदलना है। उन्होंने परिवारवाद और व्यक्तिपूजा की राजनीति पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि किसी भी विधायक, सांसद या मंत्री का पद स्थायी नहीं होना चाहिए। यह बयान तमिलनाडु की उस परंपरागत राजनीति पर करारा प्रहार है जिसमें कुछ परिवारों और सीमित चेहरों के इर्दगिर्द सत्ता घूमती रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अन्नामलाई ने राजनीति में तकनीकी विशेषज्ञों, युवाओं और सामान्य नागरिकों की भागीदारी पर जोर दिया है। उन्होंने युवाओं से राजनीति में आने की अपील करते हुए कहा कि अब आम आदमी की नई पीढ़ी की राजनीति की नींव रखी जा रही है। यह सोच उन्हें पारंपरिक नेताओं से अलग करती है। देखा जाये तो तमिलनाडु में जहां लंबे समय से भावनात्मक नारों और जातीय समीकरणों के आधार पर राजनीति चलती रही है, वहां अन्नामलाई प्रशासनिक दक्षता, नैतिकता और प्रतिभा आधारित नेतृत्व की बात कर रहे हैं। यही उनकी सबसे बड़ी ताकत बन सकती है। उनके आंदोलन के अंतर्गत कोयंबटूर में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सेंटर फोर एथिक्स एंड पॉलिटिक्स की स्थापना का फैसला भी बताता है कि वह केवल चुनावी राजनीति नहीं, बल्कि वैचारिक और नैतिक प्रशिक्षण की स्थायी व्यवस्था खड़ी करना चाहते हैं। यह दृष्टिकोण तमिलनाडु की राजनीति में एक नई बौद्धिक धारा पैदा कर सकता है। उनके आह्वान के कुछ ही समय बाद हजारों लोगों का उनके राजनीतिक आंदोलन से जुड़ना यह संकेत देता है कि जनता के एक हिस्से में बदलाव की बेचैनी पहले से मौजूद थी।

बताया जा रहा है कि अन्नामलाई ने भाजपा नेतृत्व के सामने दो स्पष्ट विकल्प रखे थे। एक तो उन्हें पर्याप्त स्वायत्तता और अधिकारों के साथ कम से कम सात वर्षों तक प्रदेश नेतृत्व दिया जाए, या फिर उन्हें स्वतंत्र राजनीतिक राह चुनने दी जाए। यह मांग उनके आत्मविश्वास और दूरदृष्टि दोनों को दर्शाती है। साथ ही इस्तीफे का ऐलान करने से पहले दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन से उनकी मुलाकात तथा पार्टी नेतृत्व द्वारा उन्हें मनाने की कोशिश इस बात का प्रमाण है कि अन्नामलाई की अहमियत से भाजपा नेतृत्व वाकिफ है।

वैसे तमिलनाडु की मौजूदा राजनीति भी अन्नामलाई के लिए अवसर लेकर आई है। हालिया विधानसभा चुनावों में द्रविड दलों को झटके लगे और अभिनेता विजय की पार्टी ने अप्रत्याशित सफलता हासिल की। इससे यह स्पष्ट हो गया कि राज्य की जनता अब पारंपरिक राजनीतिक ढांचे से बाहर विकल्प तलाश रही है। अन्नामलाई का मानना है कि राष्ट्रीय दलों के लिए यहां सीमित राजनीतिक जगह है, इसलिए एक मजबूत क्षेत्रीय विकल्प ही जनता की आकांक्षाओं को सही दिशा दे सकता है। उनकी यह समझ राजनीतिक रूप से बेहद व्यावहारिक और दूरदर्शी मानी जा रही है।

उधर, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ने भले ही कहा हो कि अन्नामलाई के जाने से पार्टी को कोई नुकसान नहीं होगा, लेकिन राजनीतिक वास्तविकता इससे अलग दिखाई देती है। अन्नामलाई ने तमिलनाडु में भाजपा को ऊर्जा, आक्रामकता और जनस्वीकार्यता दी थी। अब उनके अलग होने से भाजपा के सामने नेतृत्व और जनाधार दोनों की चुनौती खड़ी होगी। दूसरी ओर, अन्नामलाई यदि अपने आंदोलन को संगठित ढंग से आगे बढ़ाते हैं तो वह तमिलनाडु की राजनीति में तीसरी शक्ति के रूप में तेजी से उभर सकते हैं।

बहरहाल, यह स्पष्ट है कि अन्नामलाई ने केवल पार्टी नहीं छोड़ी, बल्कि तमिलनाडु की राजनीति को नई दिशा देने की चुनौती स्वीकार की है। उनकी राजनीति में साहस है, वैचारिक स्पष्टता है और बदलाव की बेचैनी भी है। आने वाले वर्षों में यह देखना बेहद दिलचस्प होगा कि क्या उनका यह आंदोलन तमिलनाडु की राजनीति में वैसा ही परिवर्तन ला पाएगा जिसकी वह कल्पना कर रहे हैं। फिलहाल इतना तय है कि अन्नामलाई ने राजनीति के मैदान में एक नई बहस छेड़ दी है और इस बहस को नजरअंदाज कर पाना किसी के लिए आसान नहीं होगा।

प्रेरणा

स्मृतियों की सरहद पर ठहरा प्रेम

भारत-विभाजन बीसवीं शताब्दी की उन त्रासद घटनाओं में से एक है, जिसने केवल भूगोल को नहीं बदला बल्कि करोड़ों लोगों की स्मृतियों, भावनाओं और जीवन को भी हमेशा के लिए प्रभावित कर दिया। जिन लोगों ने अपने घर, अपने शहर, अपनी मिट्टी और अपने प्रियजनों को अचानक छूटते देखा, उनके भीतर यह दर्द जीवन भर बना रहा। समय की धूल चाहे कितनी भी मोटी क्यों न हो जाए, कुछ यादें ऐसी होती हैं जो कभी धुंधली नहीं पड़तीं। वे अवसर मिलने पर फिर से जीवित हो उठती हैं और मनुष्य को अपने अतीत की ओर खींच ले जाती हैं। जया जादवानी का उपन्यास इसी मानवीय संवेदना, विस्थापन की पीड़ा और प्रेम की अमर भावना को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। उपन्यास का मुख्य पात्र नन्द है, जो वर्षों बाद अपने अतीत की तलाश में एक लंबी यात्रा पर निकलता है। यह यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने की यात्रा नहीं है, बल्कि स्मृतियों, भावनाओं और आत्मिक जुड़ाव की यात्रा है। उसके मन में एक चेहरा वर्षों से बसा हुआ है—सिन्धू का चेहरा। बचपन में स्कूल आते-जाते उसने उसे अनेक बार देखा था। गोरा रंग, लंबे सुनहरे बाल और मुस्कुराने पर गालों में पड़ने वाले गहरे गड्ढे नन्द की स्मृतियों में इतने गहरे अंकित हो चुके हैं कि समय भी उन्हें मिटा नहीं पाया।

वर्षों बाद नन्द कराची पहुंचता है। उसका उद्देश्य केवल किसी पुराने शहर को देखना नहीं, बल्कि उस लड़की की एक झलक पाना है जो उसके मन में दशकों से जीवित है। वहां से वह शिकारपुर जाने की तैयारी करता है, जहां उसके बचपन की अनेक स्मृतियां बिखरी पड़ी हैं। हर कदम के साथ वह अपने अतीत की ओर लौटता जाता है। उसके लिए यह यात्रा किसी खोई हुई वस्तु की तलाश नहीं, बल्कि अपने ही एक हिस्से को पुनः पाने का प्रयास है। उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्मृतियों को केवल यादों के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत अनुभवों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नन्द जब अपने पुराने शहर की गलियों से गुजरता है, तो हर मोड़ उसके भीतर किसी भूले हुए अध्याय को खोल देता है। पुराने मकान, सड़कें, पेड़ और बाजार उसे उस समय में ले जाते हैं जब जीवन सरल था और भविष्य की चिंताएं नहीं थीं। वह महसूस करता है कि कुछ शहर केवल नक्शे पर मौजूद स्थान नहीं होते, बल्कि वे मनुष्य के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं। उनकी मिट्टी, उनकी खुशबू और उनकी यादें जीवन भर साथ चलती हैं।

विस्थापन का दर्द केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने अपनी जन्मभूमि से बिछड़ने की पीड़ा झेली हो। जिन लोगों को विभाजन के दौरान अपने घर छोड़ने पड़े, उनके लिए वह भूमि केवल जमीन का टुकड़ा नहीं थी, बल्कि उनकी पहचान, संस्कृति और अस्तित्व का आधार थी। नन्द के भीतर भी यही पीड़ा है। वह केवल सिन्धू को खोजने नहीं निकला, बल्कि उस संसार को तलाश रहा है जो विभाजन की आंधी में उससे छिन गया था।

यात्रा के दौरान नन्द बार-बार स्वयं से प्रश्न करता है। आखिर इतने वर्षों बाद वह सिन्धू से क्यों मिलना चाहता है? क्या वह उसे पहचान पाएगी? क्या उसके लिए भी वे स्मृतियां उतनी ही महत्वपूर्ण हैं? लेकिन इन प्रश्नों का कोई निश्चित उत्तर उसके पास नहीं है। फिर भी उसके भीतर एक विश्वास है कि प्रेम केवल पहचान का नाम नहीं है। प्रेम कभी-कभी एक ऐसी अनुभूति बन जाता है जो व्यक्ति के जीवन का स्थायी हिस्सा बन जाती है। सामने वाला व्यक्ति उसे याद रखे या नहीं, लेकिन वह भावना अपने अस्तित्व में बनी रहती है।

लेखिका ने नन्द के मनोभावों को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। वह अपने पुराने घर के दरवाजे को छूता है तो मानो वर्षों की दूरी समाप्त हो जाती है। दीवारें, आंगन और रास्ते उसे पहचानते हुए प्रतीत होते हैं। वह उन चेहरों में अपनापन खोजता है जिन्हें समय ने बदल दिया है। यही संवेदनशीलता उपन्यास को सामान्य प्रेम कथा से अलग बनाती है। यहां प्रेम केवल दो व्यक्तियों के बीच का संबंध नहीं है, बल्कि स्मृतियों, स्थानों और अतीत से जुड़ाव का भी प्रतीक है। उपन्यास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण संवाद है, जब एक अजनबी नन्द से पूछता है, "क्या वह तुम्हें पहचान लेगी?" यह प्रश्न केवल एक व्यक्ति के बारे में नहीं है, बल्कि समय की निर्ममता के बारे में भी है। दशकों बाद कौन किसे पहचान पाएगा? नन्द का उत्तर इस पूरे उपन्यास की आत्मा को व्यक्त करता है। वह कहता है, "सवाल यह है कि क्या मैं उसे पहचान सकता हूं।" इस उत्तर में समय की दूरी, स्मृतियों की नाजुकता और भावनाओं की गहराई तीनों समाहित हैं। नन्द का एक और कथन पाठक को भीतर तक छू जाता है—"मैं बस उसे एक बार देखना चाहता हूं। आखिर ये सरहदें बनी ही क्यों हैं?" यह प्रश्न केवल उसके व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न नहीं है। यह उन लाखों लोगों की व्यथा है जिन्हें राजनीतिक निर्णयों ने अपने प्रियजनों और अपनी मातृभूमि से अलग कर दिया। सरहदें देशों को बांट सकती हैं, लेकिन मनुष्य के हृदय में बसे प्रेम और स्मृतियों को नहीं बांट सकतीं।

जब अंततः नन्द और सिन्धू की मुलाकात होती है, तब वहां शब्द गौण हो जाते हैं। वर्षों की प्रतीक्षा और अनगिनत स्मृतियां एक क्षण में सिमट जाती हैं। वे एक-दूसरे को देखते हैं और उनकी आंखों में बीते समय की पूरी कहानी उतर आती है। सिन्धू की वही हल्की मुस्कान, गालों में पड़ने वाले गड्ढे और उसकी सहज उपस्थिति नन्द के भीतर सोए हुए अतीत को फिर से जगा देती है। यह दृश्य उपन्यास का सबसे भावनात्मक और प्रभावशाली क्षण बन जाता है।

जया जादवानी ने इस रचना में विभाजन की त्रासदी को किसी राजनीतिक विमर्श के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि पाठक स्वयं को पात्रों के साथ जुड़ा हुआ महसूस करता है। उपन्यास यह बताता है कि इतिहास की घटनाएं केवल तारीखों और दस्तावेजों में दर्ज नहीं होतीं, बल्कि वे मनुष्यों के जीवन और भावनाओं में भी जीवित रहती हैं। यह कृति प्रेम, स्मृति, विस्थापन और पहचान की बहुआयामी कहानी है। इसमें विभाजन का दर्द है, बिछड़ने की कसक है, जड़ों की तलाश है और एक ऐसा प्रेम है जो समय और दूरी से परे जाकर भी जीवित रहता है। नन्द की यात्रा अंततः केवल सिन्धू तक पहुंचने की यात्रा नहीं रह जाती, बल्कि स्वयं को पुनः खोजने की यात्रा बन जाती है। यही इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि वह पाठक को यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि मनुष्य की असली पहचान उसकी स्मृतियों, उसके प्रेम और उसकी जड़ों में ही बसती है। विभाजन चाहे जितनी दूरियां पैदा कर दे, हृदय में बसे संबंधों को मिटा नहीं सकता।

विकास की अंधी दौड़ में दम तोड़ता पर्यावरण

पर्यावरण प्रदूषण वर्तमान समय में सबसे बड़ी वैश्विक समस्या है। पिछले तीन दशकों से महसूस किया जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण से ही जुड़ी है। मानवीय क्रियाकलापों के कारण प्रकृति में लगातार बढ़ते दखल के कारण पृथ्वी पर बहुत से प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हुआ है। आधुनिक जीवनशैली, पृथ्वी पर पेड़-पौधों की कमी, पर्यावरण प्रदूषण का विकराल रूप, मानव द्वारा प्रकृति का बेदर्दी से दोहन इत्यादि कारणों से मानव और प्रकृति के बीच असंतुलन की भयावह खाई उत्पन्न हो रही है। जलवायु परिवर्तन और प्रदूषित वातावरण के बढ़ते खतरे हम अब लगातार अनुभव कर रहे हैं। इसीलिए पर्यावरण की सुरक्षा तथा संरक्षण के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 5 जून को पूरी दुनिया में 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र महासभा तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा 16 जून 1972 को स्टॉकहोम में पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिए यह दिवस मनाने की घोषणा की गई थी और पहला विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 1974 को मनाया गया था। विश्व पर्यावरण दिवस का वर्ष 2026 का विषय 'प्रकृति से प्रेरित। जलवायु के लिए। हमारे भविष्य के लिए।' पर्यावरण की रक्षा और प्रकृति के उचित दोहन को लेकर हालांकि यूरोप, अमेरिका तथा अफ्रीकी देशों में 1910 के दशक से ही समझौतों की शुरूआत हो गई थी किन्तु बीते कुछ दशकों में दुनिया के कई देशों ने इसे लेकर क्योटो प्रोटोकाल, मांट्रियल प्रोटोकाल, रियो सम्मलेन जैसे कई बहुराष्ट्रीय समझौते किए हैं। अधिकांश देशों की सरकारें पर्यावरण को लेकर चिंतित तो दिखती हैं लेकिन पर्यावरण की चिंता के बीच कुछ देश अपने हितों को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण की नीतियों में बदलाव करते रहे हैं। प्रदूषित वातावरण का खामियाजा केवल मनुष्यों को ही नहीं बल्कि धरती पर विद्यमान प्रत्येक प्राणी को भुगतना पड़ता है। बड़े पैमाने पर प्रकृति से खिलवाड़ के ही कारण दुनिया के विशालकाय जंगल हर साल सुलगने लगे हैं, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को खरबों रुपये का नुकसान होने के अलावा दुर्लभ जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की अनेक प्रजातियां भी भीषण आग में जलकर राख हो जाती हैं। कोरोना काल में लॉकडाउन के दौरान दुनियाभर में पर्यावरण की स्थिति में सुधार देखा गया था, जिसने बता दिया था कि अगर हम चाहें तो पर्यावरण की स्थिति में काफी हद तक सुधार किया जा सकता है लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में पर्यावरण संरक्षण को लेकर अपेक्षित कदम नहीं उठाए जाते। न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में निरन्तर हो रही बढ़ोतरी और मौसम का लगातार बिगड़ता मिजाज गहन चिंता का विषय बना है। जलवायु परिवर्तन से निपटने को लेकर चर्चाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चर्चाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं। अपनी पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने विस्तार से यह स्पष्ट किया है कि धरती में रह-रहकर जो उथल-पुथल की प्राकृतिक घटनाएं घट रही हैं, उनके पीछे छिपे संकेतों और प्रकृति की मूक भाषा को समझना कितना जरूरी है। आधुनिकरण और औद्योगिकीकरण की दौड़ में हमने हर पल प्रकृति की नैतिक सीमाओं का उल्लंघन किया है और ये सब प्रकृति के साथ इंसान की ज्यादतियों का ही नतीजा हैं, जिसके भयावह परिणाम हमारे सामने हैं। मानवीय क्रियाकलापों के कारण ही वायुमंडल में कार्बन मोनोक्साइड, नाइट्रोजन, ओजोन और पार्टिक्यूलेट मैटर के प्रदूषण का मिश्रण इतने खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है कि हमें सांस के जरिये असाध्य बीमारियों की सौगात मिल रही है। सीवरेज की गंदगी स्वच्छ जल स्रोतों में छोड़ने की बात हो या औद्योगिक इकाईयों का अम्लीय कचरा नदियों में बहाने की अथवा सड़कों पर रेंगती वाहनों की लंबी-लंबी कतारों से वायुमंडल में घुलते जहर की या फिर सख्त अदालती निर्देशों के बावजूद खेतों में जलती पराली से हवा में घुलते हजारों-लाखों टन धुएं की, हमारी आंखें तब तक नहीं खुलती, जब तक प्रकृति का बड़ा कहर हम पर नहीं टूट पड़ता। पैट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील कर दिया गया है। धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसके दुष्परिणाम स्वरूप ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के जलमग्न होने की आशंका जताई जाने लगी है। प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें निरन्तर चेतावनियां देती रही है कि यदि हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है लेकिन हम हर बार प्रकृति का प्रचण्ड रूप देखने के बावजूद प्रकृति की इन चेतावनियों को नजरअंदाज कर खुद अपने विनाश को आमंत्रित कर रहे हैं। यदि दुनियाभर में पर्यावरण प्रदूषण की विकराल होती वैश्विक समस्या को देखें तो स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे शायद हम कुछ करना ही नहीं चाहते। 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक' में बताया गया है कि पर्यावरण का संतुलन डगमगाने के कारण दुनियाभर में लोग तरह-तरह की भयानक बीमारियों के जाल में फंस रहे हैं, उनकी प्रजनन क्षमता पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है, उनकी कार्यक्षमता भी इससे प्रभावित हो रही है। लोगों की कमाई का बड़ा हिस्सा बीमारियों के इलाज पर ही खर्च हो जाता है। प्रकृति हमारी मां के समान है, जो हमें अपने प्राकृतिक खजाने से ढ़ेरों बहुमूल्य चीजें प्रदान करती है लेकिन अपने स्वार्थों के चलते हम अगर खुद को ही प्रकृति का स्वामी समझने की भूल करने लगे हैं तो फिर भला प्राकृतिक तबाही के लिए प्रकृति को कैसे दोषी ठहरा सकते हैं?

अभियान

भारत के ऐसे मंदिर जहां स्वास्थ्य, मानसिक शांति और रोगमुक्ति की कामना लेकर पहुंचते हैं श्रद्धालु

भारत को सदियों से आध्यात्मिकता और आस्था की भूमि कहा जाता है। यहां मंदिर केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे लोगों के जीवन में आशा, विश्वास, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत भी रहे हैं। भारतीय संस्कृति में यह मान्यता रही है कि जब चिकित्सा, तर्क और सांसारिक उपाय सीमित दिखाई देने लगते हैं, तब श्रद्धा और विश्वास मनुष्य को नई शक्ति प्रदान करते हैं। यही कारण है कि देश के विभिन्न भागों में ऐसे अनेक मंदिर हैं, जिनके साथ स्वास्थ्य, रोगमुक्ति, मानसिक शांति, संतान प्राप्ति और जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति की लोकमान्यताएं जुड़ी हुई हैं।

यद्यपि आधुनिक विज्ञान और चिकित्सा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, फिर भी लाखों श्रद्धालु इन पवित्र स्थलों पर जाकर ईश्वर के समक्ष प्रार्थना करते हैं और मानसिक संबल प्राप्त करते हैं। इन मंदिरों में आने वाले भक्तों का विश्वास है कि सच्ची श्रद्धा और सकारात्मक ऊर्जा उनके जीवन में नई आशा का संचार करती है। आइए जानते हैं भारत के कुछ ऐसे प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में, जहां लोग विशेष रूप से स्वास्थ्य और आरोग्य की कामना लेकर पहुंचते हैं।

सबसे पहले बात करते हैं हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध नैना देवी मंदिर की। शिवालिक पर्वत श्रृंखला की सुंदर पहाड़ियों पर स्थित यह मंदिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार जब भगवान शिव माता सती के शरीर को लेकर तांडव कर रहे थे, तब उनके नेत्र इसी स्थान पर गिरे थे। इसी कारण इस शक्तिपीठ का नाम नैना देवी पड़ा। माता नैना देवी को दृष्टि, ज्ञान और आध्यात्मिक जागरण की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं का विश्वास है कि देवी के दर्शन से आंखों से संबंधित समस्याओं में राहत मिलती है तथा मानसिक स्पष्टता प्राप्त होती है। अनेक लोग जीवन में सही निर्णय लेने की क्षमता, सकारात्मक सोच और मानसिक शक्ति के लिए भी यहां प्रार्थना करते हैं। ऊंची पहाड़ियों के बीच स्थित यह मंदिर अपने आध्यात्मिक वातावरण के कारण श्रद्धालुओं को विशेष शांति प्रदान करता है।

इसके बाद राजस्थान के दौसा जिले में स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर का नाम आता है। यह मंदिर पूरे भारत में अपनी विशिष्ट मान्यताओं के कारण प्रसिद्ध है। भगवान हनुमान के बालाजी स्वरूप को समर्पित यह मंदिर विशेष रूप से मानसिक कष्टों, भय, चिंता और नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति के लिए जाना जाता है।

हर दिन हजारों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं और बालाजी महाराज के समक्ष अपनी समस्याओं का समाधान मांगते हैं। लोगों का विश्वास है कि यहां दर्शन करने और विशेष अनुष्ठानों में भाग लेने से मानसिक तनाव कम होता है तथा मन को नई शक्ति मिलती है। इस मंदिर की एक विशेष परंपरा यह भी है कि यहां मिलने वाला प्रसाद घर नहीं ले जाया जाता। वर्षों से चली आ रही यह परंपरा मंदिर की विशिष्ट पहचान बन चुकी है।

झारखंड के देवघर में स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम भी स्वास्थ्य और आरोग्य से जुड़ी आस्थाओं का प्रमुख केंद्र है। यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है और देशभर के श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पूजनीय माना जाता है। 'बैद्यनाथ' शब्द का अर्थ होता है—चिकित्सकों के स्वामी। भगवान शिव के इस स्वरूप को रोगों का नाश करने वाला और पीड़ाओं को दूर करने वाला माना जाता है।

श्रावण मास के दौरान यहां लाखों कांवड़िये पहुंचते हैं और जलाभिषेक करते हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि बाबा बैद्यनाथ के दर्शन और पूजा-अर्चना से शारीरिक कष्टों में राहत मिलती है, मानसिक संतुलन प्राप्त होता है और जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। मंदिर परिसर में व्याप्त भक्ति का वातावरण भक्तों को गहन आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर भारत की सबसे प्राचीन धार्मिक परंपराओं का जीवंत प्रतीक है। भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना का केंद्र माना जाता है। काशी को मोक्ष की नगरी कहा जाता है और यहां स्थित विश्वनाथ मंदिर का महत्व हजारों वर्षों से बना हुआ है। मान्यता है कि भगवान शिव के समक्ष की गई सच्ची प्रार्थना व्यक्ति को मानसिक शांति, दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य का आशीर्वाद प्रदान करती है। देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु यहां अपने जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति, रोगों से राहत और आध्यात्मिक उन्नति की कामना करते हैं। गंगा तट पर स्थित यह मंदिर श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित गर्भरक्षाम्बिगई मंदिर विशेष रूप से संतान प्राप्ति और सुरक्षित मातृत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर देवी गर्भरक्षाम्बिगई को समर्पित है, जिन्हें गर्भस्थ शिशु की रक्षक माना जाता है। वर्षों से यह मंदिर उन दंपतियों के बीच विशेष आस्था का केंद्र रहा है जो संतान सुख की कामना करते हैं। मंदिर से जुड़ी मान्यता के अनुसार देवी की कृपा से गर्भधारण, सुरक्षित गर्भावस्था और स्वस्थ प्रसव में सहायता प्राप्त होती है। देश के विभिन्न राज्यों से दंपति यहां पहुंचते हैं और विशेष पूजा-अर्चना कर अपने परिवार के सुखद भविष्य की प्रार्थना करते हैं। मंदिर का शांत और आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं के मन में विश्वास और आशा का संचार करता है।

राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में स्थित झंडेवालान मंदिर भी लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है। माता आदिशक्ति को समर्पित यह मंदिर अपने चमत्कारिक अनुभवों और लोकविश्वासों के लिए प्रसिद्ध है। यहां आने वाले भक्तों का मानना है कि माता के दर्शन से नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव कम होता है तथा जीवन में सकारात्मकता का प्रवेश होता है।

कई श्रद्धालु मानसिक तनाव, भय और जीवन की बाधाओं से मुक्ति के लिए यहां प्रार्थना करते हैं। नवरात्रि के दौरान मंदिर में विशेष उत्सव आयोजित होते हैं, जिनमें हजारों भक्त भाग लेते हैं। मंदिर का धार्मिक वातावरण श्रद्धालुओं को आत्मविश्वास और आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हीं प्रमुख मंदिरों के साथ गुजरात के गांधीनगर स्थित हनुमानजी मंदिर और महाराष्ट्र के शनि शिंगणापुर जैसे कई अन्य धार्मिक स्थल भी श्रद्धालुओं के बीच विशेष महत्व रखते हैं। इन स्थानों पर लोग जीवन की कठिनाइयों, रोगों और मानसिक परेशानियों से राहत की कामना लेकर पहुंचते हैं। भले ही इन मान्यताओं का आधार धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों में निहित हो, लेकिन इन मंदिरों का सबसे बड़ा योगदान लोगों को मानसिक शक्ति और आशा प्रदान करना है। दरअसल, स्वास्थ्य केवल शरीर की स्थिति नहीं है। मानसिक शांति, सकारात्मक सोच और आत्मिक संतुलन भी अच्छे स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण आधार हैं। जब व्यक्ति किसी पवित्र स्थान पर जाकर प्रार्थना करता है, तो उसके भीतर आशा और विश्वास का संचार होता है। यही सकारात्मक भावना उसे कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है।

भारत के ये मंदिर केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे मानवीय भावनाओं, सांस्कृतिक परंपराओं और सामूहिक विश्वास का भी प्रतीक हैं। यहां आने वाले लोग केवल चमत्कार की अपेक्षा लेकर नहीं आते, बल्कि अपने मन को शांत करने, जीवन में नई ऊर्जा प्राप्त करने और ईश्वर से जुड़ने की इच्छा भी रखते हैं।

आज के तनावपूर्ण और व्यस्त जीवन में जब मानसिक स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है, तब ऐसे आध्यात्मिक स्थल लोगों को आत्मिक शांति और संतुलन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चाहे वह नैना देवी का दिव्य धाम हो, मेहंदीपुर बालाजी का आध्यात्मिक केंद्र, बाबा बैद्यनाथ का ज्योतिर्लिंग, काशी विश्वनाथ का पवित्र परिसर, गर्भरक्षाम्बिगई का मातृत्व से जुड़ा मंदिर या झंडेवालान माता का शक्तिपीठ—इन सभी स्थानों की एक समान विशेषता है कि वे श्रद्धालुओं को आशा, विश्वास और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि आस्था और स्वास्थ्य का संबंध केवल चमत्कारों तक सीमित नहीं है। सच्ची श्रद्धा व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाती है, जीवन के संघर्षों से लड़ने का साहस देती है और उसे सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है। भारत के ये आरोग्य-धाम इसी आध्यात्मिक शक्ति और मानवीय विश्वास के जीवंत प्रतीक हैं, जहां हर वर्ष लाखों लोग अपने बेहतर स्वास्थ्य, सुख और शांति की कामना लेकर पहुंचते हैं।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

पाटण, भुज, भावनगर और राजकोट रीजनल साइंस सेंटर के नागरिकों में वैज्ञानिक अभिरुचि विकसित करने में निभा रहे महत्वपूर्ण भूमिका

▸▸ 12 वर्ष – विकास के, जनविश्वास के और जनकल्याण के
▸▸ गुजरात के रीजनल साइंस सेंटर बने वैज्ञानिक चेतना के केंद्र
▸▸ चार वर्षों में 25 लाख से अधिक विज्ञानप्रेमियों ने की मुलाकात
▸▸ पाटण रीजनल साइंस सेंटर : उत्तर गुजरात में वैज्ञानिक क्रांति का एपिसेंटर
▸▸ भुज रीजनल साइंस सेंटर : सीमावर्ती जिलों में प्रज्वलित विज्ञान की ज्योत
▸▸ भावनगर रीजनल साइंस सेंटर : सोलर प्लांट, 'जीरो वॉटर वेस्ट' युक्त ग्रीन कैम्पस
▸▸ राजकोट रीजनल साइंस सेंटर : ऑगमेंटेड रियलिटी, वर्चुअल रियलिटी, होलोग्राम और सिम्युलेशन जोन जैसी नेक्स्ट जेन टेक्नोलॉजी का शिक्षण

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने 12 वर्ष पूरे किए हैं। इन बारह वर्षों में गुजरात ने विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को पार किया है। राज्य में पिछले 12 वर्षों में विज्ञान के प्रसार और जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए 4 रीजनल साइंस सेंटर स्थापित किए गए हैं, जिनका अब तक 25.64 लाख से अधिक विज्ञानप्रेमी मुलाकात कर चुके हैं। गुजरात काउंसिल ऑन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (जीयूजेसीओएसटी) द्वारा राज्य में स्थापित किए गए ये रीजनल साइंस सेंटर आगंतुकों के लिए मानो जीवंत प्रयोगशाला बन गए हैं। उत्तर गुजरात में पाटण, सौराष्ट्र में राजकोट, भावनगर तथा कच्छ में स्थापित ये रीजनल साइंस सेंटर विभिन्न क्षेत्रों के शहरी और ग्रामीण इलाकों में विज्ञानप्रेमियों की जिज्ञासा को संतुष्ट कर रहे हैं।

रीजनल साइंस सेंटर, पाटण : उत्तर गुजरात में वैज्ञानिक क्रांति का एपिसेंटर

गुजरात स्थापना दिवस 1 मई, 2022 के अवसर पर पाटण साइंस सेंटर का लोकार्पण किया गया। उत्तर गुजरात के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के नागरिकों के बीच इस केंद्र ने विशेष आकर्षण पैदा किया है। शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध पाटण स्थित इस साइंस सेंटर का अब तक लगभग 14.86 लाख से अधिक विज्ञानप्रेमी मुलाकात कर चुके हैं। इस रीजनल सेंटर ने 2700 से अधिक स्कूलों को जोड़ते हुए 7 लाख से अधिक विद्यार्थियों और नागरिकों को विज्ञान अभिमुख बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय है कि इस सेंटर ने विज्ञान ग्राम सभा जैसी पहल के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं, किसानों और दिव्यांगजनों के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित कर विज्ञान को समावेशी बनाया है। इस केंद्र के बारे में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एनएफएम, गांधीनगर के तत्कालीन मिशन निदेशक श्री जे. सी. पंड्या ने कहा, "पाटण रीजनल साइंस सेंटर अपनी अद्भुत और ज्ञानवर्धक गैलरियों के माध्यम से विज्ञानप्रेमियों को उत्कृष्ट अनुभव प्रदान कर रहा है।" वर्ष 2025 में नेशनल एनर्जी कन्जर्वेशन अवॉर्ड प्राप्त करने वाले इस केंद्र में 200 किलोवाट क्षमता का सोलर प्लांट स्थापित कर टिकाऊ विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाई गई है।

पाटण रीजनल साइंस सेंटर बना विज्ञान का उद्दीपक

▸▸ 890 से अधिक वर्कशॉप
▸▸ 579 वैज्ञानिक व्याख्यान मालाएं
▸▸ 1,900 से अधिक विज्ञान शो
▸▸ डीएनए, रोबोटिक्स, हाइड्रोपोनिक्स और मेकाट्रॉनिक्स के हैंड्स-ऑन पाठ्यक्रम

भुज रीजनल साइंस सेंटर – सीमा तक पहुंची विज्ञान की ज्योत

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों द्वारा 28 अगस्त, 2022 को इसका लोकार्पण किया गया। भुजिया डुंगर की तलहटी में स्थित इस केंद्र का मुलाकात 1,100 से अधिक विद्यालयों के 1.37 लाख से अधिक विद्यार्थी कर चुके हैं। आज तक लगभग 2.57 लाख से अधिक देश-विदेश के नागरिक इसकी यात्रा कर चुके हैं, जिनमें नाइजीरिया, ऑस्ट्रेलिया, यूएसए और सऊदी अरब जैसे देशों के पर्यटक भी शामिल हैं। यहां 6 अद्भुत गैलरियां, 3डी मूवी, मरीन तथा सबमरीन सिम्युलेटर उपलब्ध हैं। यह केंद्र बच्चों के लिए भी विभिन्न गतिविधियां संचालित करता है। यहां आयोजित समर वर्कशॉप में 2,500 से अधिक बच्चों को फन विद फिजिक्स, एस्ट्रोनॉमी, मेंटल मैथ्स और ओरिगामी से परिचय विकसित करने का अवसर प्रदान किया गया। 25 दिसंबर, 2024 के दिन यहां भारत की सबसे बड़ी सार्वजनिक स्पेस ऑब्जर्वेटरी का उद्घाटन किया गया, जहां 24 इंच की दूरबीन के माध्यम से अब तक 3,500 से अधिक नागरिकों ने अंतरिक्ष के रहस्यों को जानने का प्रयास किया है।

रीजनल साइंस सेंटर, भावनगर : सौराष्ट्र में अनुभव आधारित शिक्षा का ग्रीन मॉडल

29 सितंबर, 2022 को भावनगर में प्रारंभ हुआ यह रीजनल साइंस सेंटर 20 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। अब तक लगभग 2.90 लाख से अधिक विद्यार्थी और नागरिक इसकी यात्रा कर चुके हैं। यहां मरीन, ऑटोमोबाइल, बायोलॉजी, इलेक्ट्रो-मैकेनिक्स तथा नोबेल पुरस्कार विषयक पांच गैलरियां उपलब्ध हैं। विज्ञानप्रेमी श्री परेश आर. सरवैया के अनुसार, यहां विभिन्न गैलरियों का रखरखाव अत्यंत उत्कृष्ट है तथा स्टाफ भी प्रभावी मार्गदर्शन प्रदान करता है। इन गैलरियों में 9डी वर्चुअल रियलिटी सिम्युलेटर, विशाल एक्वेरियम, पीजो-इलेक्ट्रिक फ्लोर तथा इंटरैक्टिव पजल जोन मौजूद हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप एसटीईएम, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), रोबोटिक्स तथा शिक्षक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने वाला यह केंद्र 100 किलोवाट सोलर प्लांट और 'जीरो वॉटर वेस्ट' व्यवस्था के साथ सिंगल यूज़ प्लास्टिक मुक्त ग्रीन कैंपस का दर्जा प्राप्त कर चुका है।

राजकोट रीजनल साइंस सेंटर: इनोवेशन और फ्यूचरिस्टिक टेक्नोलॉजी का हब

19 अक्टूबर, 2022 को लोकार्पित राजकोट रीजनल साइंस सेंटर में 'हाउ स्टफ वर्क्स', रोबोटिक्स, मशीन इंजीनियरिंग, ग्लास एंड सिरामिक्स, नोबेल पुरस्कार तथा लाइफ साइंस जैसी 6 थीम आधारित गैलरियां हैं। लगभग 1.67 लाख से अधिक विद्यार्थियों तथा 3.64 लाख से अधिक आगंतुकों ने यहां विज्ञान जगत के रहस्यों को जाना और समझा है। कैंपस में ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर), वर्चुअल रियलिटी (वीआर), होलोग्राम और सिम्युलेशन जोन के माध्यम से बच्चों को ड्रोन टेक्नोलॉजी तथा एसटीईएम कार्यशालाओं जैसी नेक्स्ट जनरेशन टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 12 वर्षों के राष्ट्रीय नेतृत्व तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया के नेतृत्व में गुजरात ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर भावनगर रेलवे मंडल में वृक्षारोपण एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित

रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार आयोजित विश्व पर्यावरण अभियान के समापन अवसर पर पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा दिनांक 05 जून, 2026 (शुक्रवार) को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में मंडल कार्यालय परिसर (नई बिल्डिंग के सामने), भावनगर परा में वृक्षारोपण एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री एस. के. मिश्रा के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने की। इस अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ पर्यावरण संरक्षण एवं हरित विकास के संदेश के साथ वृक्षारोपण कर किया गया। मंडल के सभी शाखा अधिकारियों ने विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया तथा उनके संरक्षण एवं संवर्धन का संकल्प लिया।

पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित निबंध एवं ड्राइंग प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। साथ ही प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान कर उनकी सहभागिता की सराहना की गई।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अधिकाधिक वृक्षारोपण करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक दिवस तक सीमित न रहकर हमारी जीवनशैली का अभिन्न अंग बनना चाहिए।

इस अवसर पर श्रीमती शालिनी वर्मा ने पर्यावरण संरक्षण को जन-आंदोलन का स्वरूप देने की आवश्यकता पर बल देते हुए बच्चों एवं युवाओं को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनकर स्वच्छ, हरित एवं सतत् विकासोन्मुख वातावरण के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा सहित मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। समारोह के दौरान उपस्थित सभी जनों ने पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण तथा स्वच्छ एवं हरित वातावरण के निर्माण हेतु अपना सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण के प्रति भावनगर मंडल की प्रतिबद्धता तथा सतत् विकास के प्रति उसके निरंतर प्रयासों का परिचायक रहा।

शाला प्रवेशोत्सव से पहले प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकें पहुँचाने के लिए प्रशासन सज्ज : राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अध्यक्ष श्री मनुभाई पावरा

▸▸ वैश्विक चुनौतियों के बावजूद पाठ्यपुस्तकों में कोई मूल्य वृद्धि नहीं, अभिभावकों पर एक भी रुपए का अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा : अध्यक्ष श्री पावरा
▸▸ भौतिक रूप से पुस्तकें पहुँचने में विलंब हो, तो भी शिक्षा कार्य अवरुद्ध नहीं होगा; पाठ्यपुस्तक मंडल ने की अत्याधुनिक 'डिजिटल बैकअप' व्यवस्था : अध्यक्ष

गांधीनगर : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री मनुभाई पावरा ने कहा है कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन औरे शिक्षा मंत्री श्री प्रद्युमन वाजा तथा शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रिवाबा जाडेजा के नेतृत्व में पाठ्यपुस्तक वितरण का कार्य चल रहा है। गुजरात बोर्ड से संबद्ध प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक के सभी माध्यमों की पाठ्यपुस्तकों को निर्धारित समयसीमा में विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए मंडल द्वारा युद्धस्तर पर एवं सुदृढ़ आयोजन के साथ कार्य शुरू किया गया है।

अध्यक्ष श्री मनुभाई ने अधिक विस्तार से जानकारी देते हुए स्पष्ट किया कि चालू शैक्षणिक वर्ष में विद्यार्थियों के हित में कुछ नूतन विषयों को जोड़कर पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया समय पर प्रारंभ कर दी गई थी, लेकिन कुछ अनिवार्य न्यायिक प्रक्रियाओं - कोर्ट केस तथा ईरान सहित अन्य देशों के बीच उत्पन्न हुई वैश्विक युद्ध की विषम स्थिति के कारण कागज के आयात में लगभग ढाई से तीन महीनों का आकस्मिक विलंब हुआ था। हालाँकि; मंडल की समग्र टीम सभी अंतरराष्ट्रीय एवं कानूनी अवरोधों को पार कर विद्यार्थियों का शैक्षणिक कार्य जरा भी प्रभावित न हो; इसके लिए हाल में दिन-रात पुरजोर तरीके से प्रिंटिंग कार्य कर रही है। अध्यक्ष श्री पावरा ने राज्य के नागरिकों तथा अभिभावकों को विश्वास दिलाया कि इन सभी आकस्मिक वैश्विक चुनौतियों के बावजूद पुस्तकों के मूल्य में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं की गई है और अभिभावकों पर एक भी रुपए का अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ने नहीं दिया जाएगा।

पुस्तक वितरण की वर्तमान स्थिति तथा आगामी सुदृढ़ आयोजन की रूपरेखा देते हुए अध्यक्ष श्री मनुभाई ने जोड़ा कि राज्य के निजी एवं नॉन-ग्रांटेड विद्यालयों के लिए शुल्कयुक्त पुस्तकें वितरकों तक समय पर पहुँचा दी गई हैं, जो वर्तमान में विद्यार्थियों को उपलब्ध भी हो चुकी हैं, जबकि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के सभी विद्यार्थियों को आगामी 'शाला प्रवेशोत्सव' से पूर्व ही सभी पाठ्यपुस्तकें तहसील स्तर तक पूर्ण रूप से निःशुल्क मिल जाएँ; ऐसी माइक्रो-प्लानिंग प्रशासन द्वारा सुनिश्चित की गई है। इसके अतिरिक्त; सरकारी तथा ग्रांटेड माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में भी पुस्तकें अत्यंत तेजी से पहुँचाने के लिए विभिन्न सरकारी एजेंसियाँ तत्परता से कार्य कर रही हैं। अभिभावकों और विद्यार्थियों को पूर्ण रूप से आश्वस्त करते हुए अध्यक्ष श्री मनुभाई ने कहा कि भौगोलिक चुनौतियों अथवा सुदूरवर्ती-रिमोट क्षेत्रों में आकस्मिक परिस्थितिवश यदि भौतिक रूप से (फिजिकली) पुस्तक पहुँचने में थोड़ा भी विलंब हो, तो भी विद्यार्थियों का शैक्षणिक कार्य कहीं अवरुद्ध न हो; इसके लिए मंडल ने अत्याधुनिक 'डिजिटल बैकअप' की अग्रिम व्यवस्था की है। मंडल की आधिकारिक वेबसाइट https://gsstb.gujarat.gov.in/gsstb/Textbook पर सभी माध्यमों की पाठ्यपुस्तकें डिजिटल रूप में - ई-पुस्तकों (e-Books) के रूप में अपलोड कर दी गई हैं। शैक्षणिक सत्र के प्रारंभिक चरण में शिक्षक तथा विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के वेबसाइट से सीधे ही प्रकरणों को डाउनलोड कर सकेंगे। इसके साथ ही; शिक्षक भी इनका संदर्भ के रूप में उपयोग कर बच्चों को पढ़ा सकेंगे। पाठ्यपुस्तक मंडल के अध्यक्ष श्री मनुभाई पावरा ने कहा कि राज्य सरकार तथा पाठ्यपुस्तक मंडल हर विद्यार्थी के उज्ज्वल भविष्य और शैक्षणिक हित के प्रति अत्यंत संवेदनशील एवं गंभीर है और किसी भी विषम स्थिति में भी अंतिम छोर के बच्चे तक शिक्षा की सुविधा पहुँचाने के लिए हम कटिबद्ध हैं।

वटवा से साबरमती रेलवे स्टेशन के बीच रेलवे कर्मचारी लगाएंगे वृक्ष, पर्यावरण दिवस पर 100 पौधों के साथ डीआरएम ने की शुरुआत

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए वटवा से साबरमती रेलवे स्टेशन के मध्य ग्रीन कॉरिडोर विकसित करने की योजना का शुभारंभ किया। मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) श्री वेद प्रकाश ने 100 पौधों का रोपण कर इस महत्वाकांक्षी अभियान की शुरुआत की।

अहमदाबाद मंडल द्वारा 15 मई से 5 जून 2026 तक चलाए गए 21 दिवसीय विश्व पर्यावरण दिवस अभियान का समापन आज बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण, स्वच्छता एवं जन-जागरूकता कार्यक्रमों के साथ हुआ। अभियान के दौरान मंडल भर में 1200 से अधिक पौधे लगाए गए, जबकि अहमदाबाद एवं साबरमती स्टेशनों पर यात्रियों और नागरिकों के बीच 200-200 पौधों का वितरण किया गया।

समापन समारोह के दौरान वटवा स्थित आरपीएफ बैरक परिसर में डीआरएम श्री वेद प्रकाश, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शेफाली गुप्ता, महिला कल्याण समिति की सदस्याओं, शाखा अधिकारियों तथा रेल कर्मचारियों ने सामूहिक वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

ग्रीन कॉरिडोर योजना के अंतर्गत अब वटवा से साबरमती रेलवे स्टेशन के बीच रेलवे कर्मचारी चरणबद्ध तरीके से बड़ी संख्या में वृक्षारोपण करेंगे। इसका उद्देश्य रेलवे परिसर और रेल मार्ग के आसपास हरित आवरण बढ़ाना, वायु गुणवत्ता में सुधार लाना तथा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना है।

डीआरएम श्री वेद प्रकाश ने कहा कि अहमदाबाद मंडल पर्यावरण संरक्षण, जल एवं ऊर्जा बचत तथा सतत विकास के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि वटवा–साबरमती ग्रीन कॉरिडोर परियोजना रेलवे परिसरों को अधिक हरित, स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

उन्होंने बताया कि रेलवे कर्मचारी अपनी सुविधा के अनुसार वटवा से साबरमती तक रेलवे ट्रैक के दोनों ओर नीम, गुलमोहर, अशोक, एरिका पाम इत्यादि जैसे पर्यावरण-अनुकूल एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप वृक्ष लगाएंगे। इन वृक्षों के विकसित होने पर इस मार्ग से गुजरने वाली ट्रेनों के यात्रियों को एक आकर्षक ग्रीन बेल्ट का अनुभव होगा।

वृक्षारोपण इस प्रकार किया जाएगा कि रेलवे ट्रैक, ओवरहेड विद्युत तार (OHE), सिग्नलिंग प्रणाली तथा ट्रेन संचालन में किसी भी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न हो। रेलवे सुरक्षा मानकों का पूर्ण पालन करते हुए पौधों का चयन एवं रोपण किया जाएगा।

1. स्वच्छता शपथ एवं यात्री जागरूकता (15.05.2026 से 19.05.2026)

▸▸ सभी प्रमुख स्टेशनों पर "स्वच्छता शपथ" कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

▸▸ यात्रियों को प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग करने और यात्रा के दौरान अपनी पानी की बोतल साथ रखने के लिए प्रेरित किया गया।

▸▸ स्टेशन स्टॉल संचालकों एवं विक्रेताओं को गैर-प्लास्टिक और पर्यावरण-अनुकूल कट्लरी अपनाने का परामर्श दिया गया।

▸▸ सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली (PA System) द्वारा लगातार जागरूकता संदेश प्रसारित किए गए।

2. स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन (19.05.2026 से 22.05.2026)

▸▸ स्टेशनों और आसपास के क्षेत्रों में विशेष सफाई अभियान चलाकर प्लेटफॉर्मों पर कचरा पृथक्करण (Waste Segregation) सुनिश्चित किया गया।

▸▸ स्थानीय समुदायों और NGOs के सहयोग से जैविक अपशिष्ट प्रबंधन और प्लास्टिक उपयोग में कमी पर काम किया गया।

3. प्लास्टिक न्यूनीकरण एवं सतत प्रथाएं (23.05.2026 से 26.05.2026)

▸▸ स्टेशनों पर स्थापित प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनों के रखरखाव की समीक्षा की गई।

▸▸ सिंगल-यूज प्लास्टिक के प्रतिबंध को कड़ाई से लागू करने के लिए स्टॉलों का औचक निरीक्षण किया गया।

▸▸ कैटरिंग और ट्रेन सेवा प्रदाताओं को पुनर्चक्रित उत्पाद अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

▸▸ विशेष पहलः माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से विक्रेताओं को थैलियों का उपयोग कम से कम करने के प्रति जागरूक किया गया।

4. हरित एवं सतत रेल परिचालन (27.05.2026 से 30.05.2026)

▸▸ "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत रेलवे कॉलोनियों और परिसरों में बड़े पैमाने पर पौधे लगाए गए।

▸▸ कॉलोनियों में सतत जीवनशैली (Sustainable Living) और स्वच्छ वायु के स्वास्थ्य लाभों पर जागरूकता सत्र आयोजित किए गए।

▸▸ रेल कर्मचारियों के लिए चित्रकला, निबंध लेखन तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

5. जल एवं ऊर्जा संरक्षण (31.05.2026 से 04.06.2026)

▸▸ जल संवर्धनः रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सहित जल संरक्षण प्रथाओं को बढ़ावा दिया गया। वाटर रीसाइक्लिंग सिस्टम (ACWP सिस्टम सहित) का निरीक्षण किया गया तथा जलाशयों की सफाई और पुनरुद्धार के कार्य किए गए।

▸▸ ऊर्जा दक्षताः कुशल जल उपयोग और ऊर्जा संरक्षण (जैसे- एलईडी लाइट्स का उपयोग, एसी का अनुकूलतम तापमान और उपयोग न होने पर उपकरणों को बंद करना) पर विशेष जागरूकता अभियान चलाए गए।

▸▸ मिशन लाइफ (Mission LiFE): स्कूलों, एनजीओ, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन्स (RWAs) और स्थानीय निकायों के सहयोग से 'मिशन लाइफ' की थीम पर बड़े पैमाने पर नागरिक भागीदारी अभियान चलाए गए। इसके अंतर्गत रीसाइक्लिंग, कंपोस्टिंग (खाद बनाना) और स्वस्थ व सतत जीवन शैली को बढ़ावा दिया गया।

▸▸ ई-कचरा प्रबंधनः अधिकृत रीसायकलर्स के माध्यम से ई-कचरे (E-Waste) के पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता और संग्रह अभियान चलाया गया।

5 जून 2026: विश्व पर्यावरण दिवस (समापन समारोह)

आज अभियान के अंतिम दिन, इस वर्ष के मुख्य विषय 'जलवायु परिवर्तन' (Climate Change) पर ध्यान केंद्रित करते हुए विश्व पर्यावरण दिवस गरिमापूर्ण तरीके से मनाया गया।

▸▸ जन-जागरूकताः यात्रियों और आम जनता को शिक्षित करने के लिए प्रमुख रेलवे स्टेशनों, कार्यस्थलों और कॉलोनियों में स्काउट्स, सामाजिक समूहों और गणमान्य व्यक्तियों की भागीदारी के साथ विशेष जागरूकता अभियान चलाए गए।

▸▸ उपलब्धियों का उत्सवः समापन समारोह के दौरान 3 सप्ताह तक चले इस उत्सव की उपलब्धियों को रेखांकित किया गया, उत्कृष्ट योगदान देने वाले कर्मचारियों व सहयोगियों को सम्मानित किया गया और पूरे अभियान की एक संक्षिप्त समीक्षा रिपोर्ट जारी की गई।

अहमदाबाद मंडल पर्यावरण संरक्षण, जल-ऊर्जा संरक्षण और सतत विकास के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है। 'मिशन लाइफ' के सिद्धांतों को अपनाकर ही हम जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती का सामना कर सकते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर भरूच में सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने किया वृक्षारोपण,वडोदरा मंडल में आयोजित हुए विविध जागरूकता कार्यक्रम

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा "मिशन LiFE (Lifestyle for Environment)" के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण एवं हरित जीवनशैली को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में भरूच रेलवे इंस्टीट्यूट परिसर में विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भरूच के माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कहा कि प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का माध्यम नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों को स्वच्छ एवं सुरक्षित भविष्य प्रदान करने का सशक्त प्रयास है। उन्होंने सभी नागरिकों से अधिकाधिक वृक्षारोपण करने तथा दैनिक जीवन में पर्यावरण-अनुकूल आदतों को अपनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके, अन्य वरिष्ठ मंडल अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा मौके पर सभी को माननीय सांसद ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ग्रहण कराते हुए हरित एवं स्वच्छ वातावरण के निर्माण का संकल्प दिलवाया।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में वडोदरा मंडल मुख्यालय में भी विविध पर्यावरणीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डीआरएम कार्यालय स्थित बालमंदिर परिसर से पर्यावरण जागरूकता रैली के साथ हुआ, जिसमें मंडल रेल प्रबंधक, पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) की अध्यक्षा, अपर मंडल रेल प्रबंधक, शाखा अधिकारीगण, रेलवे कर्मचारी, स्काउट एवं गाइड तथा सिविल डिफेन्स कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं हरित जीवनशैली का संदेश प्रसारित किया गया। इसके पश्चात स्विमिंग पूल गार्डन क्षेत्र में आयोजित मुख्य समारोह में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को श्री मंडल प्रबंधक द्वारा पर्यावरण संरक्षण की शपथ ग्रहण कराई गई एवं पौधारोपण किया। वडोदरा वन विभाग के सहयोग से लगभग 500 पौधों का वितरण किया गया तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण विषयक निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। सिविल डिफेन्स टीम द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया तथा विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए पर्यावरण प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इसके अतिरिक्त BRCY स्थित सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट में उद्यान अपशिष्ट एवं जैविक कचरे से निर्मित जैविक खाद का वितरण किया गया तथा कर्मचारियों को पौधे वितरित कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

पश्चिम रेलवे, वडोदरा मंडल द्वारा आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से "मिशन LiFE – Adopt, Adapt and Act" के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया तथा सभी को स्वच्छ, हरित एवं सतत भविष्य के निर्माण में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया गया।

पश्चिम रेल्वे
विभिन्न कार्य
मंडल रेल प्रबंधक (WA), पश्चिम रेलवे, छठी मंजिल, इंजीनियरिंग विभाग, मुंबई सेंट्रल, मुंबई 400 008 ई-निविदा अधिसूचना संख्या BCT/26-27/55 दिनांक 01/06/2026 के माध्यम से कार्य और स्थान: मुंबई सेंट्रल: लाइन क्रमांक 2,3 और 4 को तोड़कर कवर शेड के बिना IBL नींव के साथ 02 पिट लाइन और 03 लेयर निरीक्षण का प्रावधान। (संयुक्त निविदा) कार्य की अनुमानित लागत: ₹28,03,11,108.78/-EMD:₹56,06,200.00/- जमा करने की तिथि और समय: दि.26.06.2026 को 15.00 बजे तक। खुलने की तिथि और समय: दि. 26.06.2026 को 15.30 बजे तक। ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं। 0189
हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 'मिशन फाइव मिलियन ट्रीज' अभियान के तहत अहमदाबाद में वृक्षारोपण के

- ▸▸ शहर में हवा की गुणवत्ता में सुधार करने और प्रदूषण के स्त्रोतों की सटीक जानकारी हासिल करने के लिए 'मोबाइल सोर्स अपोर्शनमेंट लेबोरेटरी' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया
- ▸▸ मियावाकी पद्धति पर आधारित क्लॉन्ग-ऑन फॉरेस्ट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट का शुभारंभ
- ▸▸ इस वर्ष 'मिशन फाइव मिलियन ट्रीज' के अंतर्गत अहमदाबाद शहर में कुल 50 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद शहर में हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए शुक्रवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) के 'मिशन फाइव मिलियन ट्रीज' अभियान के तहत वृक्षारोपण के महाअभियान का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने शहर में हवा की गुणवत्ता में सुधार करने और प्रदूषण के स्त्रोतों की सटीक जानकारी हासिल करने के लिए एक विशेष मोबाइल लेबोरेटरी- मोबाइल सोर्स अपोर्शनमेंट को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस स्मार्ट सेंसिंग और डिजिटल इंटेलिजेंस प्रोजेक्ट (मोबाइल रीयल-टाइम सोर्स अपोर्शनमेंट लेबोरेटरी) का मुख्य उद्देश्य अहमदाबाद शहर में वायु प्रदूषण फैलाने वाले मुख्य स्त्रोतों की वैज्ञानिक जांच करना और हवा की गुणवत्ता में सुधार करना है।

मुख्यमंत्री ने शहर में हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण को और मजबूत करने के लिए मियावाकी पद्धति पर आधारित क्लॉन्ग-ऑन फॉरेस्ट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट का भी शुभारंभ किया।

ज्ञात हो कि बढ़ती शहरी आबादी और तेज शहरीकरण के कारण शहरों में हीट आइलैंड इफेक्ट लगातार बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप 40 से 45 डिग्री सेल्सियस तापमान में भी गर्मी का अनुभव लंबे समय तक रहता है। सामान्य स्थिति में गर्मी का प्रभाव 1 से 2 घंटे में कम हो जाता है, लेकिन मौजूदा स्थिति में इसका प्रभाव 3 से 4 घंटे तक महसूस किया जाता है। इस चुनौती को ध्यान में रखकर अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा पिछले कुछ वर्षों से 'मिशन फाइव मिलियन ट्रीज' अभियान चलाया जा रहा है।

पिछले पांच वर्ष के दौरान अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा शहर के विभिन्न जोन में किए गए वृक्षारोपण के आंकड़े भी महत्वपूर्ण हैं। जहां, वर्ष 2019-20 के दौरान 11,66,387 पौधे लगाए गए। वहीं, वर्ष 2020-21 के दौरान 10,13,856 पौधे, वर्ष 2021-22 के दौरान 12,82,014 पौधे, वर्ष 2022-23 के दौरान 20,75,431 पौधे, वर्ष 2023-24 के दौरान 20,05,795 पौधे, वर्ष 2024-25 के दौरान 30,13,151 पौधे तथा वर्ष 2025-26 के दौरान लगभग 41,16,715 पौधे लगाए गए।

अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर 'मिशन फाइव मिलियन ट्रीज' (वृक्षारोपण) अभियान के अंतर्गत इस वर्ष शहर में 50 लाख पौधे लगाने का आयोजन किया गया है। इस संदर्भ में, मुख्यमंत्री सहित अन्य महानुभावों ने महानगर के चांदखेड़ा इलाके में पौधा लगाया।

अहमदाबाद में हरियाली बढ़ाने के लिए एयर क्वालिटी विभाग ने हॉट स्पॉट क्षेत्रों की पहचान की है। ऐसे इलाकों में विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए अधिक मात्रा में वृक्षारोपण किया जाएगा, ताकि वायु गुणवत्ता सूचकांक में सुधार लाया जा सके। इस अवसर पर पेड़ों के संरक्षण और विस्तार के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी), कॉर्पोरेट-सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) और कॉर्पोरेट-पर्यावरण उत्तरदायित्व (सीईआर) मॉडल के तहत विभिन्न संस्थानों के साथ सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर भी किए गए।

शहर की मुख्य सड़कों, डिवाइडरों, सार्वजनिक स्थानों, उद्यानों तथा उपलब्ध खुली जगहों में व्यापक तौर पर पौधे लगाए जाएंगे। इसके अलावा, शहर के नागरिकों को भी इस अभियान से जोड़ने के लिए एएमसी सेवा मोबाइल एप्लीकेशन के जरिए 'ग्रीन वॉलंटियर' और 'मेमोरियल पार्क' जैसी पहलों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। रिहायशी सोसायटियों को 'ग्रीन सोसायटी' के रूप में विकसित करने के लिए भी विशेष अभियान चलाया जाएगा। यदि नागरिक अपने घर या सोसायटी में वृक्षारोपण करना चाहते हैं, तो वे एएमसी सेवा ऐप पर रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं, जिसके बाद एएमसी की टीम घर आकर निःशुल्क वृक्षारोपण करेगी।

कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, अहमदाबाद के महापौर श्री हितेशभाई बारोट, विधायक सर्वश्री अमितभाई शाह, जीतूभाई, अल्पेश ठाकोर, हसमुख पटेल, हर्षद पटेल, कौशिक जैन, उप महापौर श्री अंजूबेन शाह, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री कमलेशभाई पटेल, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पानी, शासक पक्ष के नेता श्री जशुभाई ठाकोर, सचेतक श्री अतुल मिश्रा सहित पार्षदगण और मनपा के पदाधिकारी, अधिकारी और नागरिक उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस - 2026

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पर्यावरण दिवस से 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' का राज्यव्यापी शुभारंभ किया

- ▸▸ गांधीनगर में पीपल के वृक्ष का रोपण कर सभी को पानी, पेट्रोल और ऊर्जा बचाने तथा सघन वृक्षारोपण करने का संदेश दिया
- ▸▸ प्रधानमंत्री के सस्टेनेबल डेवलपमेंट के विचार को 'बैक टू बेसिक' के माध्यम से आगे बढ़ाने के लिए दैनिक जीवन में पर्यावरण आधारित जीवनशैली अपनाएं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
- ▸▸ 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' अंतर्गत राज्यभर में 551.91 लाख पौधों के रोपण की वन विभाग की योजना
- ▸▸ वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी की विशेष उपस्थिति

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर से 5 जून, विश्व पर्यावरण दिवस से 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' अभियान की राज्यव्यापी शुरुआत करवाई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने धरती माता को हरियाली से आच्छादित करने के पर्यावरण प्रिय दृष्टिकोण के साथ वर्ष 2024 से 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की शुरुआत की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री के सफल सुशासन के 12 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों के अंतर्गत इस वर्ष के विश्व पर्यावरण दिवस से 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' का शुभारंभ करवाया।

मुख्यमंत्री ने वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री प्रवीणभाई माळीकी विशेष उपस्थिति में गांधीनगर के 'ज' रोड स्थित लोकभवन स्टाफ क्वार्टर्स के निकट लगभग 0.5 हेक्टेयर क्षेत्र में कुल 5000 पौधों के रोपण कार्य का शुभारंभ 'एक पेड़ मां के नाम 3.0' अभियान के अंतर्गत किया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर नागरिकों से अनुरोध किया कि पर्यावरण दिवस केवल उत्सव नहीं बल्कि लोगों के रोजमर्रा के जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए। मुख्यमंत्री ने अपील की कि प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए मिशन लाइफ (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरमेंट) को अपनाते हुए रोजमर्रा के उपयोग में पानी और पेट्रोल जैसे पारंपरिक ईंधनों की बचत करें तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के नागरिकों से अनुरोध किया कि सभी के सहयोग से सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए 'बैक टू बेसिक' के ध्येय के साथ पर्यावरण-अनुकूल वातावरण का निर्माण करें।

राज्य सरकार के वन विभाग द्वारा 2026-27 दौरान 'एक पेड़ मां के नाम 3.0 और वन महोत्सव अंतर्गत समग्र राज्य में कुल 74453.90 हेक्टेयर क्षेत्र में 551.91 लाख पौधों के रोपण की योजना बनाई गई है। आगामी मानसून में नागरिकों को आसानी से पौधे उपलब्ध हो सकें, इसके लिए 423 नर्सरियों से कुल 11.80 करोड़ पौधों के वितरण की भी योजना बनाई गई है।

पिछले वर्ष की तुलना में वन विभाग द्वारा वन कवच लक्ष्य में वृद्धि करते हुए चालू वर्ष में 440 हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 300 स्थानों पर वन कवच निर्माण करने, तथा ग्रीन वॉल ऑफ अरावली परियोजना के अंतर्गत कुल 6,652 हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण करने एवं 20,100 हेक्टेयर क्षेत्र में मैंग्रोव रोपण करने की योजना बनाई गई है।

'एक पेड़ मां के नाम 3.0' अभियान के शुभारंभ अवसर पर गांधीनगर शहर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, राज्यसभा सांसद श्री मयंक नायक, गांधीनगर शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशीष दवे, वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव डॉ. विनोद राव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं हेड ऑफ द फॉरेस्ट फोर्स डॉ. जयपालसिंह, गांधीनगर जिला कलेक्टर श्री रविंद्र खटाले तथा अन्य वरिष्ठ वन अधिकारी उपस्थित रहे।

रेल सेवा पुरस्कार–2026 : भावनगर मंडल के श्रेष्ठ कर्मचारियों एवं इकाइयों को सम्मान

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा उत्कृष्ट कार्य निष्पादन, नवाचार, सुरक्षा, यात्री सेवा एवं संगठनात्मक दक्षता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "रेल सेवा पुरस्कार (Rail Seva Puraskar – 2026)" समारोह का आयोजन शुक्रवार, 05 जून 2026 को कम्युनिटी हॉल, भावनगर परा में किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) श्री दिनेश वर्मा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने वर्ष 2025 के दौरान अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उल्लेखनीय एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों तथा विभिन्न इकाइयों को रेल सेवा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

हाल ही में आयोजित पश्चिम रेलवे के 71वें रेल सप्ताह पुरस्कार समारोह में भावनगर मंडल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तीन प्रतिष्ठित दक्षता शील्ड प्राप्त कर गौरव हासिल किया। मंडल को रेल मदद शिकायतों के प्रभावी निपटारे हेतु रेल मदद दक्षता शील्ड, सुरक्षा मानकों में उत्कृष्ट कार्य के लिए संरक्षा शील्ड तथा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया। ये पुरस्कार पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय द्वारा प्रदान किए गए।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मंडल के कर्मचारियों ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा, नवाचार एवं उत्कृष्ट कार्य संस्कृति के माध्यम से रेलवे की कार्यकुशलता, सुरक्षा मानकों तथा यात्री सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रेल सेवा पुरस्कार–2026 से सम्मानित कर्मचारियों में श्री दीपक सिंह, श्री राजेश कुमार, श्री रुतार्थ मनोजकुमार झावेरी, श्री रोहित कुमार, श्री रामनाथ यादव, श्री कल्पेश कुमार मोहनलाल, श्री दिनेशचंद्र खटीक, श्री रंजीत पटेल, श्री हार्दिक मंजीभाई कंडोलिया, श्री प्रेमचंद मीणा, श्री निप्पू कुमार, श्री रौशन कुमार, श्री विकास कुमार, श्री छोटू कुमार साह, श्री राहुल शर्मा, श्री सतीश कुमार, श्री जिग्नेशपुरी हीरापुरी गोस्वामी, श्री आकाश भालिया, श्री नरसिम्हा रेड्डी दुलाम, श्री जितेंद्र पंचाल, श्री बजरंग दास, श्री राहुल जैन, श्री विपुलकुमार जयंतिलाल परमार तथा श्री सुनील कुमार शामिल हैं।

समारोह के दौरान मंडल की विभिन्न इकाइयों एवं स्टेशनों को भी उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। बोटाद यार्ड को सुरक्षित एवं कुशल संचालन, पीपावाव पोर्ट साइडिंग को सर्वाधिक माल लदान तथा भावनगर टर्मिनस, लिमडी एवं जाम जोधपुर स्टेशनों को स्वच्छता एवं यात्री सुविधाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।

इसी प्रकार अमरेली एवं बोटाद एडीईएन इकाई को सर्वश्रेष्ठ ट्रैक अनुरक्षण, धोला को सर्वश्रेष्ठ रेलवे कॉलोनी, पोरबंदर को सर्वश्रेष्ठ कोचिंग डिपो, जूनागढ़ को सर्वश्रेष्ठ सिग्नल एवं दूरसंचार डिपो, धोला को सर्वश्रेष्ठ विद्युत डिपो, जेतलसर को सर्वश्रेष्ठ टीआरडी डिपो, महुवा को सर्वश्रेष्ठ रनिंग रूम तथा भावनगर टर्मिनस आरपीएफ पोस्ट को सुरक्षा प्रदर्शन में उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि रेल सेवा पुरस्कार केवल उत्कृष्ट कार्यों की पहचान नहीं है, बल्कि कर्मचारियों को और अधिक समर्पण, नवाचार तथा दक्षता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सम्मानित कर्मचारी एवं इकाइयाँ भविष्य में भी यात्रियों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने तथा भारतीय रेल की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देती रहेंगी।

इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा सहित मंडल के अधिकारी, कर्मचारी एवं मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन ने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए भावनगर मंडल को उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

भरूच रेलवे स्टेशन पर माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा द्वारा आधुनिक डिजिटल लाउंज एवं कन्वीनियंस स्टोर का उद्घाटन

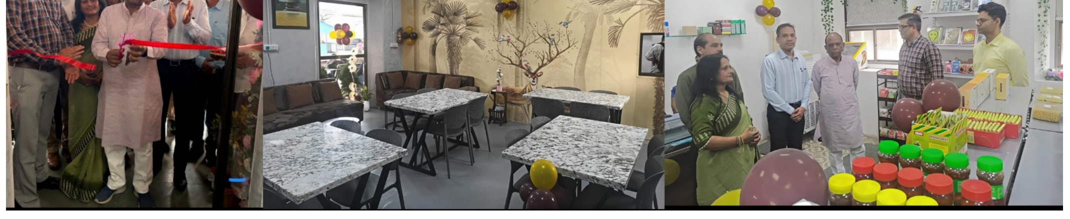

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के भरूच रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को आधुनिक एवं सुविधाजनक सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत स्टेशन पर नव विकसित डिजिटल लाउंज एवं कन्वीनियंस स्टोर का उद्घाटन माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा के करकमलों द्वारा आज संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके तथा रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारी,जनप्रतिनिधियों एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थिति रहे।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने मीडिया को सम्बोधित करते हुए बताया कि भरूच रेलवे स्टेशन पर यात्रिओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो,इसका ध्यान रखा जा रहा है। इसी कड़ी में आज स्टेशन पर दो महत्वपूर्ण सुविधाओं डिजिटल लाउंज एवं कन्वीनियंस स्टोर की शुरुआत की जा रही है। भरुच स्टेशन आने वाले दिनों में मुंबई,वडोदरा एवं सूरत रेलवे स्टेशनों की तर्ज पर और आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जायेंगीं। उन्होंने बताया कि यात्रियों की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए मंडल रेल प्रबंधक द्वारा भरुच स्टेशन पर विभिन्न विकास कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने बताया माननीय सांसद के मार्गर्शन और रेल मंत्रालय के निर्देशन पर भरुच को वडोदरा और सूरत के स्टैण्डर्ड जैसा बनाया जाये इसलिए हम सुविधाओं को अपग्रेड कर रहे है,फैसिलिटीज को बढ़ाते जा रहे हैं। माननीय सांसद के सुझाव एवं मार्गदर्शन पर वडोदरा की तर्ज पर आज भरुच स्टेशन पर भी डिजिटल लाउन्ज का उद्धघाटन किया गया। यह नॉन फेयर रेवेन्यु के तहत बनाया गया है। स्टेशन पर लॉन्ग डिस्टेंस ट्रेन से यहाँ आने वाले यात्रिओं के लिए मेन प्लेटफार्म नंबर 2 पर इसके होने के कारण यह बहुत ही कनविनिएंट है और यहाँ रिज़नेबल रेट पर यात्रिओं के लिए रेस्ट करने और खाने की फैसिलिटी उपलब्ध है। साथ ही आज पश्चिम रेलवे का प्रथम कन्वीनियंस स्टोर भरुच स्टेशन पर शुरु किया गया है,जहाँ यात्रिओं को प्रॉपर रेट पर उनकी रिक्वायरमेंट की चीजे उपलब्ध होंगी। श्री भडके ने आगे बताया कि भरुच स्टेशन पर पैदल ऊपरी पुल का कार्य एडवांस स्टेज पर है,जिससे हम जल्द पूरा करेंगे। नर्मदा नदी पर सौ साल पुराने ब्रिज के रिकंस्ट्रक्शन का कार्य स्वीकृत हो गया है। इसके साथ भरुच यार्ड की री मॉडलिंग होगी, साथ ही प्लेटफार्म की लम्बाई बढ़ाई जाएगी,जिससे हम फ्यूचर में लॉन्ग डिस्टेंस की ट्रेनें भी प्लेटफार्म पर रोक पाएंगे।

नई सुविधाओं की जानकारी देते हुए वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री नरेन्द्र कुमार ने बताया कि डिजिटल लाउंज में यात्रियों के लिए कार्यस्थल (वर्कस्पेस),निःशुल्क वाई-फाई,सीसीटीवी निगरानी,मोबाइल एवं लैपटॉप चार्जिंग प्वाइंट, आरामदायक बैठने की व्यवस्था तथा प्रिंटिंग,स्कैनिंग एवं फोटोकॉपी जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अतिरिक्त यात्री प्रतीक्षा के दौरान चाय, कॉफी, पेय पदार्थ एवं हल्के नाश्ते का भी लाभ उठा सकेंगे। यह सुविधा 24×7 संचालित होगी तथा इसमें प्रवेश नियंत्रण प्रणाली,उन्नत शौचालय,कैशलेस भुगतान व्यवस्था, स्वच्छता,सुरक्षा एवं पर्यावरण-अनुकूल व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह डिजिटल लाउंज भरूच रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के यात्रा अनुभव को और अधिक आरामदायक एवं सुविधाजनक बनाएगा। कन्वीनियंस स्टोर यात्रियों को बेहतर खरीदारी अनुभव प्रदान करेगा तथा स्टेशन सुविधाओं में और अधिक मूल्य संवर्धन करेगा। यह पहल स्टेशन परिसंपत्तियों के बेहतर उपयोग के माध्यम से गैर-किराया राजस्व (Non-Fare Revenue) को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है।

पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित एवं विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है। डिजिटल लाउंज एवं कन्वीनियंस स्टोर की यह नई सुविधा भरूच रेलवे स्टेशन पर यात्री अनुभव को और अधिक आरामदायक एवं सुविधाजनक बनाएगी।

यात्री सेवा में पश्चिम रेलवे की अनूठी पहलः डीआरएम ने 'स्वर्ण जयंती राजधानी एक्सप्रेस' में यात्रियों से किया सीधा संवाद

रेल सेवाओं में निरंतर गुणात्मक सुधार, परिचालन दक्षता और शत-प्रतिशत यात्री संतुष्टि को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा एक बेहद संवेदनशील और अनूठी पहल की गई है। इस विशेष अभियान के तहत अहमदाबाद मंडल के मण्डल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश ने नई दिल्ली–साबरमती स्वर्ण जयंती राजधानी एक्सप्रेस में स्वयं यात्रा की। यात्रा के दौरान उन्होंने चलती ट्रेन में सफर कर रहे 100 से अधिक यात्रियों के साथ उनके बर्थ पर जाकर सीधा संवाद स्थापित किया और रेलवे द्वारा प्रदान की जा रही विभिन्न सेवाओं का विस्तृत फीडबैक लिया।

सफर के दौरान मण्डल रेल प्रबंधक ने फर्स्ट एसी, सेकंड एसी और थर्ड एसी सहित विभिन्न कोचों का व्यापक दौरा किया। उन्होंने बच्चों, बुजुर्गों, महिला सह-यात्रियों और कामकाजी युवाओं से बेहद आत्मीय व सौहार्दपूर्ण माहौल में बातचीत की। इस सघन संवाद के दौरान मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर यात्रियों से विस्तृत समीक्षा की गईः

कोचों की स्वच्छता (Cleanliness): यात्रा के दौरान ऑन-बोर्ड हाउसकीपिंग सर्विस (OBHS) की सक्रियता और टॉयलेट्स की सफाई व्यवस्था को लेकर यात्रियों से सीधे सवाल किए गए।

लिनन की गुणवत्ता (Linen Quality): यात्रियों को उपलब्ध कराए जा रहे कंबल, चादर, तकिये एवं तौलियों की स्वच्छता तथा उनकी पैकेजिंग की गुणवत्ता का निरीक्षण किया गया। 3 एसी कोचों में ताज़ा (फ्रेश) लिनन उपलब्ध नहीं कराने पर संबंधित वेंडर पर 1 लाख का जुर्माना लगाया गया।

खानपान व्यवस्था (Catering & Food Quality): राजधानी एक्सप्रेस में परोसे जाने वाले भोजन के स्वाद, स्वच्छता एवं मेनू की विविधता के संबंध में यात्रियों से फीडबैक लिया गया, जिस पर अधिकांश

यात्रियों ने संतोष व्यक्त किया। गुणवत्तापूर्ण चावल उपलब्ध नहीं कराने पर संबंधित वेंडर पर 1 लाख का जुर्माना लगाया गया। संवाद के दौरान यात्रियों ने बिना किसी झिझक के रेलवे के बुनियादी ढांचे को और मजबूत बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव साझा किए। इसी कड़ी में कुछ कामकाजी युवाओं और कॉरपोरेट प्रोफेशनल्स ने डीआरएम के समक्ष एक बेहद अभिनव सुझाव रखा। युवाओं का कहना था किः "राजधानी जैसी प्रीमियम ट्रेनों में युवाओं या कामकाजी यात्रियों के लिए एक 'विशेष वर्किंग कोच' या कस्टमाइज्ड स्पेस की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि जो लोग देर रात तक लैपटॉप पर काम करना चाहते हैं, वे अन्य सह-यात्रियों की नींद में खलल डाले बिना लाइट जलाकर अपना काम कर सकें।"

इसके अलावा वरिष्ठ नागरिकों और महिला यात्रियों ने भी सुरक्षा और लोअर बर्थ के आवंटन को लेकर कुछ महत्वपूर्ण व्यावहारिक इनपुट्स दिए।

इस अवसर पर मण्डल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने कहा, "यात्रियों की संतुष्टि और उनका सुरक्षित व आरामदायक सफर ही भारतीय रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यात्रियों से प्राप्त होने वाले सुझाव और जमीनी फीडबैक हमारी सेवाओं में निरंतर सुधार करने तथा उन्हें अधिक जन-अनुकूल बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।"

ट्रेन में सवार यात्रियों ने मण्डल रेल प्रबंधक की इस संवेदनशील और जमीनी पहल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यात्रियों का कहना था कि रेलवे के इतिहास में यह एक बड़ा बदलाव है जब इतने उच्च स्तर के अधिकारी स्वयं यात्रियों की सीट तक आकर उनकी समस्याओं और सुझावों को सुन रहे हैं। यह कदम भारतीय रेलवे के आधुनिक, पारदर्शी और उत्तरदायी (Responsive) स्वरूप को दर्शाता है।

इस प्रकार के सीधे संपर्क कार्यक्रमों से न केवल रेल प्रशासन और आम जनता के बीच का फासला कम होता है, बल्कि रेल सेवाओं की गुणवत्ता को एक नए वैश्विक स्तर पर ले जाने का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

राज्यसभा चुनाव में सियासी शतरंज बिछी, कांग्रेस ने अनुभव पर जताया भरोसा तो भाजपा ने नए समीकरण साधे

नई दिल्ली। राज्यसभा चुनावों को लेकर राष्ट्रीय राजनीति में हलचल तेज हो गई है। संसद के उच्च सदन में अपनी उपस्थिति मजबूत करने और भविष्य की राजनीतिक रणनीति को धार देने के उद्देश्य से देश की दो प्रमुख राजनीतिक पार्टियों कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी ने अपने-अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी है। उम्मीदवारों की सूची सामने आने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि जहां कांग्रेस ने अनुभवी और लंबे समय से संगठन से जुड़े नेताओं पर भरोसा जताया है, वहीं भाजपा ने कुछ नए चेहरों को आगे बढ़ाकर राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की है। दोनों दलों की घोषणाओं ने आगामी राज्यसभा चुनाव को राजनीतिक दृष्टि से और अधिक रोचक बना दिया है।

कांग्रेस अध्यक्ष Mallikarjun Kharge की अंतिम स्वीकृति के बाद जारी उम्मीदवारों की सूची में सात नेताओं को राज्यसभा चुनाव के लिए मैदान में उतारा गया है। इस सूची में सबसे अधिक चर्चा राष्ट्रीय प्रवक्ता Pawan Khera के नाम को लेकर हो रही है। कांग्रेस ने उन्हें कर्नाटक से उम्मीदवार बनाया है। लंबे समय से पार्टी के प्रमुख प्रवक्ताओं में शामिल पवन खेड़ा राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श में कांग्रेस का पक्ष प्रभावी ढंग से रखने वाले नेताओं में गिने जाते हैं। उनकी उम्मीदवारी को पार्टी द्वारा संगठन और विचारधारा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के सम्मान के रूप में देखा जा रहा है।

पवन खेड़ा का राजनीतिक सफर पिछले कुछ वर्षों में कई उतार-चढ़ाव से गुजरा है। वर्ष 2022 के राज्यसभा चुनाव के दौरान उनका नाम संभावित उम्मीदवारों की चर्चा में था, लेकिन अंतिम सूची में जगह नहीं मिल सकी थी। उस समय उन्होंने सोशल मीडिया पर भावुक टिप्पणी करते हुए लिखा था कि शायद उनकी तपस्या में कोई कमी रह गई। राजनीतिक गलियारों में उस वक्त उनकी प्रतिक्रिया की काफी चर्चा हुई थी। अब चार वर्ष बाद कांग्रेस ने उन्हें राज्यसभा भेजने का निर्णय लेकर उनकी प्रतीक्षा को समाप्त कर दिया है। पार्टी के भीतर इसे संगठन के प्रति समर्पित नेताओं को सम्मान देने के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

कर्नाटक से कांग्रेस ने कुल तीन नेताओं को उम्मीदवार बनाया है। इनमें पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पवन खेड़ा और अल्पसंख्यक समुदाय के वरिष्ठ नेता Mansoor Ali Khan शामिल हैं। कर्नाटक में कांग्रेस की मजबूत स्थिति को देखते हुए इन उम्मीदवारों की जीत की संभावना भी प्रबल मानी जा रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि खड़गे और खेड़ा दोनों को राज्यसभा भेजकर कांग्रेस राष्ट्रीय स्तर पर अपने राजनीतिक और वैचारिक नेतृत्व को और मजबूत करना चाहती है।